अध्याय एक

# पंद्रहवीं सदी के अंत में यूरोप का चेहरा

यूरोपीय इतिहास में पंद्रहवीं सदी के अंतिम वर्षों की अवधि काफी महत्वपूर्ण है। इस दौरान यहां आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों ने यूरोप को सामंती काल से पूर्व आधुनिक युग में ला खड़ा किया। भौगोलिक खोजों ने भी यूरोपीय गतिविधियों को दुनिया के अन्य महादेशों में फैलने की संभावना दी। इनसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार का विकास हुआ और विदेशी भूमि के दोहन के नए अवसर प्राप्त हुए। स्वयं यूरोप के भीतर भी कृषि में परिवर्तन और वाणिज्यिक पुनर्संरचना आरंभ हो गई। अर्थव्यवस्था के विकास के साथ-साथ शहरों का भी विकास होने लगा। इससे पूंजीवादी दिशा में परिवर्तन को बल मिला। व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र भूमध्यसागरीय शहरों से हटकर अटलांटिक तट हो गया। अर्थव्यवस्था का मुद्रीकरण तेजी से बढ़ा। वाणिज्यिक उपकरण और व्यावसायिक संस्थाएं अधिकाधिक उपयोग में आने लगीं। इन परिवर्तनों का आरंभ यूरोप के कई भागों में सामंतवाद के पतन के साथ हुआ। अत: अठारहवीं सदी के अंत का यूरोप पंद्रहवीं सदी के अंतिम वर्षों के यूरोप से काफी भिन्न था।

## भौगोलिक सीमाएं

पंद्रहवीं सदी के अंत में यूरोप कई मामलों में अभी भी मध्यकालीन था। यद्यपि पहाड़, पठार, समतल भूमि और नदियां वैसी ही थीं जैसी कि वे आज हैं लेकिन इन भौगोलिक आकृतियों पर मनुष्य की निर्भरता अपेक्षाकृत काफी अधिक थी। कुछ अन्य परिवर्तन भी हुए। नदियों के मार्ग बदल गए, ठीक वैसे ही जैसे जंगल के अधीन क्षेत्र में काफी कमी आई है। नदियां अपेक्षाकृत शीघ्र ही भर जाया करती थीं। जनसांख्यिकीय पैटर्न में भी व्यापक बदलाव आया है।

पंद्रहवीं सदी के अंतिम वर्षों के यूरोप को भौगोलिक आकृतियों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में बांटा जा सकता है। आर्थिक विविधताएं कुछ हद तक भूआकृतियों, जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों द्वारा प्रभावित थीं। अन्य महादेशों के विपरीत यूरोप में व्यावहारिक रूप में कोई रेगिस्तान नहीं है। इसलिए यहां कृषि योग्य भूमि का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक है। यहां खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में थी खास तौर पर कोयला और लोहा। ये दो खनिज

औद्योगिक विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। भूगोलार्द्ध के मध्य में अवस्थित होने के कारण भूमि और जल के प्रमुख विस्तार के संबंध में यूरोप भाग्यशाली रहा है। यह तीन ओर से महासागरों से घिरा है। भूमध्यसागर क्षेत्र में अवस्थित होने का इसे यह लाभ था कि यहां से समुद्री मार्ग द्वारा विश्व के किसी भी भाग में पहुंचा जा सकता था। यूरोप उत्तर-पश्चिम और दक्षिण में समुद्र से घिरा है। इससे यूरोपीय शक्तियों को आर्थिक विस्तार करने के साथ-साथ नौसेना को मजबूत करने में भी मदद मिली। यूरोपीय सुदूर क्षेत्रों में आसानी से पहुंच सके और अपनी राजनीतिक और आर्थिक सर्वोच्चता स्थापित कर सके। पूरब में यूरोप एशिया महाद्वीप के मुख्य भाग से मिलता है। यहां इसकी सीमाएं कृत्रिम रही हैं। उत्तर-पूरब में इसका विस्तार रूस के विस्तार की ओर जारी रहा। उत्तर से दक्षिण तक फैला यूराल पहाड़ इसकी सीमा नहीं बन सकता क्योंकि कई स्थानों पर इसे आसानी से पार किया जाता रहा है। अतः स्थायी राजनीतिक सीमा की अनुपस्थिति में और निरंतर आक्रमणों की संभावना के कारण यह क्षेत्र संघर्षों और विद्रोहों का स्रोत बना रहा। काला सागर और कैस्पियन सागर की उपस्थिति ने रूस को इस क्षेत्र के छोटे-छोटे राज्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने, ऑटोमन साम्राज्य के प्रसार का प्रतिरोध करने और एशियाई व्यापार पर नियंत्रण करने के लिए प्रोत्साहित किया। वनस्पति के आधार पर तीन क्षेत्रों में इसके विभाजन, शंकुधारी, पर्णपाती और घास के मैदान ने यहां के लोगों के रहन-सहन को प्रभावित किया। *मस्कोवाइट* राज्य पर्णपाती क्षेत्र में स्थित था। यहां राई, जौ, जई और गेहूं की खेती होती थी। शहर काफी दूर-दूर स्थित थे और अधिकांश उत्तरी क्षेत्र बर्फ से ढके रहते थे। आबादी विरल होने के कारण इस क्षेत्र में रूस का विकास नहीं हो पाया। पंद्रहवीं सदी के अंत तक रूस यूरोप के बनिस्बत एशिया के अधिक करीब था। मध्यकाल से ही समुद्र, खास तौर पर बर्फ रहित समुद्र तक पहुंचना रूस का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था। समुद्र से रूस की लंबी और ऐतिहासिक दूरी को ही पश्चिमी देशों से इसके अलग-थलग होने का प्रमुख कारण माना जा सकता है। दक्षिण में ततार और तुर्क काला सागर का रास्ता रोके खड़े थे। पश्चिम में लिथुआनिया, स्वीडेन और फिनलैंड रूस को बाल्टिक को हथियाने से रोकते थे। रूस के लिए श्वेत सागर का मार्ग ढूंढ़ने में घना उत्तरी जंगल आड़े आ रहा था। एक अंगरेज ने ही यह रास्ता रूसियों को सोलहवीं सदी के मध्य में बताया था। पश्चिम के दबाव ने रूस को अपना विस्तारवादी आंदोलन पूरब की दिशा में अग्रसर करने को मजबूर किया। रूसी लोग 1639 तक प्रशांत तट पर पहुंच चुके थे। लगभग आधी सदी बाद उन्होंने बाल्टिक तट पर अपना पहला अड्डा बनाया। उधर पश्चिमी यूरोप में व्यापारिक प्रसार के कारण सामंती व्यवस्था चरमरा रही थी; इसलिए पश्चिम यूरोप का दूरी के कारण रूस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। इस क्षेत्र की भौगोलिक रचना ने दासप्रथा को लंबे समय तक जारी रहने में मदद की। यहां तक कि व्यापार का विस्तार भी सामंतवादी नियंत्रण में ही हुआ और इसके विखंडन का कारण बनने के बजाए इसने सामंतवाद को और भी सुदृढ़ किया।



एक अन्य भौगोलिक क्षेत्र मध्य यूरोप था। इसमें पोलैंड, प्रशा, ब्रैंडेनबर्ग और कई अन्य छोटे और बड़े राज्य शामिल थे। इस क्षेत्र की कोई संरचनात्मक एकरूपता नहीं थी। भौगोलिक आकृतियों और सामुदायिक समूहों के रूप में व्यापक भिन्नता थी। उत्तरी क्षेत्र हिमनदीय निम्नक्षेत्र है, मध्य में पहाड़ और नदी-घाटी है और नीचे का क्षेत्र समतल मैदान है। जलवायु की दृष्टि से यह पश्चिमी यूरोप के आर्द्र परिवर्तनीय मौसम और पूर्वी यूरोप के स्थायी रूप से शुष्क और आत्यंतिक मौसम के बीच सीमांत क्षेत्र है। अनेक छोटे और कुछ बड़े राज्य थे जो उन्नीसवीं सदी तक स्वतंत्र रहे और इनके प्रशा के साथ विलय ने शक्तिशाली जर्मन साम्राज्य का निर्माण किया। दक्षिण में आल्प्स और उत्तर में बाल्टिक और उत्तरी सागर और कई नौयात्रा सुलभ नदियों से घिरा यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों से बखूबी जुड़ा था। यद्यपि इस क्षेत्र में राजनीतिक एकता की कमी थी, फिर भी यह क्षेत्र विनिर्माण, वाणिज्य और बौद्धिक गतिविधियों की धुरी था। यह चांदी, तांबा और लोहा जैसी खनिज संपदा के लिए जाना जाता था, जबकि कृषि में खेती योग्य भूमि और घास के मैदान शामिल थे। मध्यकाल में मध्य यूरोप में अनेक नगर और छोटे शहर थे लेकिन सामंतवादी संरचना काफी शक्तिशाली बनी हुई थी।

उत्तरी यूरोप में स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप था। इसमें स्वीडेन, फिनलैंड, नार्वे और निचले देश शामिल थे। स्कैंडिनेविया और स्कॉटलैंड की पहाड़ियों पर लंबे समय तक हिमनद रहा था। परिणामस्वरूप, यहां 'घोर हिम युग' और बीच-बीच में अंतरहिमयुगीन गरम अंतराल रहा था। भूगर्भ इतिहास से पता चलता है कि कई युगों में स्कैंडिनेविया वर्तमान ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका के समान ही बर्फ से ढक गया था। इसका विस्तार उत्तरी सागर और बाल्टिक के पार रूस में और उत्तरी जर्मनी और पोलैंड तक हो गया था। इससे यहां का जनजीवन गंभीर रूप से प्रभावित हो गया। पंद्रहवीं सदी में उत्तर सागर के निकट स्थित देशों ने कृषि में कोई विस्तार का अनुभव नहीं किया। कृषि व्यवस्था अपनी सीमाओं को पार कर चुकी थी और इसमें मंदी शुरू हो गई थी। सोलहवीं सदी के पूर्वार्द्ध की प्रमुख विशेषताएं थीं—बंजर पड़े खेत और आबादी रहित उजड़े गांव। बाद के समय में दिखने वाली संपन्नता तब आरंभ नहीं हुई थी। बाद में यह क्षेत्र डेयरी उत्पादन और औद्योगिक गतिविधि के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ। हालैंड के निकट एक अन्य क्षेत्र बाल्टिक सागर था, जो खाद्यान्न उत्पादन के भंडार के रूप में विकसित हो रहा था। निचले देशों (लो कंट्रीज) की एक रोचक विशेषता यह थी कि आंतरिक क्षेत्रों का काफी बड़ा भाग समुद्र तल से नीचे था। यहां तटबंधों के जरिए भूमि को खेती योग्य बनाने की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी। सोलहवीं सदी के दौरान यह अत्यंत उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा। मध्य काल में निचले देशों ने नगर जीवन के अति शीघ्र विकास का प्रदर्शन किया था। यह वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण केंद्र बना। बाद में इसने कृषि उत्पादन में भी प्रगति की। इसे अनेक वाणिज्यिक बढ़त हासिल थीं जिनका दोहन सोलहवीं सदी के बाद से किया जाने वाला था।

यूरोप का दक्षिणी क्षेत्र आल्प्स प्रदेश है। यह स्पेन प्रायद्वीप से लेकर काला सागर के तट और एशिया माइनर तक फैला हुआ है। उस समय आल्प्स पर्वत श्रृंखला को पार करना उत्तरी और दक्षिणी यूरोप के बीच यातायात और परिवहन में सबसे बड़ी बाधा थी। यहां न केवल भूभाग में ही वरन जलवायु और मिट्टी में भी काफी भिन्नता थी। फसलों की खेती घाटियों और ढलानों पर ही सीमित थी। इटली के शहरों को छोड़ कर यहां ग्राम्य जीवन की प्रधानता थी। दक्षिणी यूरोप में तीन महत्वपूर्ण प्रायद्वीप थे—आइबेरियाई, इतालवी और ग्रीक। ब्रोदेल ने इन्हें एकत्रित रूप में भूमध्यसागरीय क्षेत्र कहा है। यहां की जलवायु और इसकी वनस्पति इस क्षेत्र को इसकी आंतरिक अनेकता और विविधता के बावजूद एकसूत्र में बांधती थी और सामान्य कृषि कार्य को प्रेरित करती रही। समस्त भूमध्यसागरीय तट की भौगोलिक आकृतियां पठारी और पहाड़ी भूमि के रूप में समान थीं। वहीं आल्प्स पहाड़ के कारण इटली शेष यूरोप से कटा हुआ था। आइबेरियाई प्रायद्वीप पीरेनिस द्वारा फ्रांस से कटा हुआ था। भूमध्यसागरीय जलवायु और शेष यूरोप की जलवायु में काफी अंतर है। गरमी के महीनों में अल्पवृष्टि और सरदी में अपेक्षाकृत अधिवृष्टि और कम तापमान ने इस क्षेत्र की वनस्पति को प्रभावित किया है। भूमध्यसागर के तटीय प्रदेश में मृदा की कमियों और जलवायु के कारण खाद्यान्नों की खेती में विशिष्टता नहीं आ सकी। मध्य और पश्चिमी यूरोप के घने पर्णपाती जंगलों के विपरीत भूमध्यसागरीय जंगलों का विकास खुले समूहों में हुआ। यह झाड़ियों में तबदील हो गया। यहां शराब और जैतून का उत्पादन विशेष रूप से होता था। कुछ क्षेत्रों में मकई की खेती भी की जाने लगी। इन तीनों उत्पादों को 'भूमध्यसागरीय त्रयी' कहा गया है। ये उनकी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार थे। प्राचीन काल से ही उत्तरी इटली के बड़े मैदानों में लैटिन के उपयोग का प्रसार हो रहा था। दो प्रमुख व्यापार बंदरगाहों वेनिस और जेनोआ के उदय से आल्प्स के पार यूरोप के अनेक भागों में लैटिन संस्कृति के प्रसार में सहायता मिली। इसी प्रकार आइबेरियाई प्रायद्वीप की मृदा में भी कमी थी। मध्य पठार के बीच पहाड़ और घाटियां थीं। बिस्के की खाड़ी के किनारे ऊंचे पहाड़ों के कारण आंतरिक क्षेत्र शुष्क और अनुर्वर हो गए थे। अत: स्पेन भेड़ पालन पर केंद्रित था। बारहवीं सदी में मूर आबादी पशुचारी ग्राम्य अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे रही थी। यहां गड़ेरियों का समूह अस्तित्व में आया जिसे *मेस्ता* कहते हैं। उन्होंने *मेरिनो* नामक बेहतरीन किस्म की भेड़ का पालन आरंभ किया। इस संगठन का रोचक पहलू भेड़ की झुंडों का उपयोग करके विशिष्ट मार्ग प्रणाली का विकास करना था। इन विशिष्ट राजमार्गों के निर्माण भेड़ पालने वाले किसानों की प्रवासी प्रकृति के कारण हुआ। ये लोग 350 से 450 मील की दूरी पैदल तय किया करते थे। इन राजमार्गों की सुरक्षा राज्य के विनियमों द्वारा की जाती थी। स्पेन का ऊन कपड़ा बनाने के लिए फ्लैंडर्स ले जाया जाता था। मेदिना देल कैंपो ऊन व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। नियमित प्रवास के कारण पशुचारी समूहों और कृषक समूहों के बीच टकराव होते थे। इससे उस क्षेत्र के जंगलों पर उलटा प्रभाव पड़ता था और कृष्य भूमि



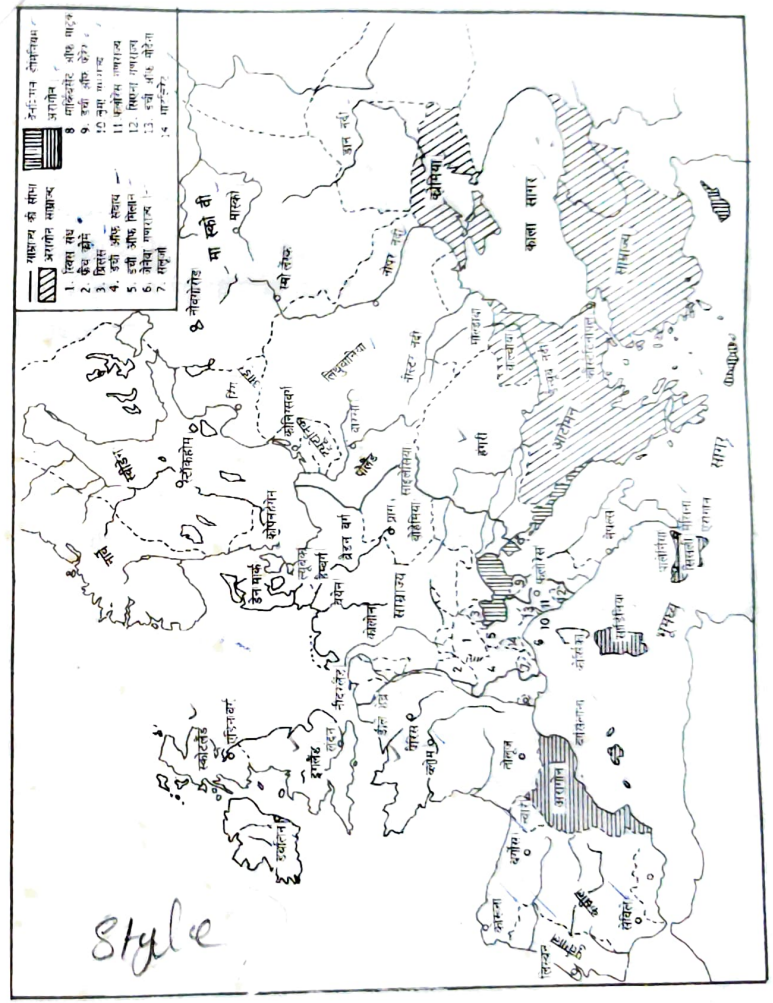


मानचित्र 1.1 : सन् 1500 में यूरोप

पर खेती को प्रोत्साहन नहीं मिल सका।

पंद्रहवीं सदी में इटली एक दर्जन से भी अधिक राज्यों में बंट गया था। यह भूमध्यसागरीय क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण भाग था। उत्तरी भूमध्यसागरीय तटीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से पहाड़ी और पठारी भूमि की अधिकता थी। इससे विदेशी आक्रमणकारी तो नहीं रुके लेकिन लोगों को एक साथ मिलकर अपना अस्तित्व बनाने में यह बड़ी रुकावट थी। बिखरी उर्वर भूमि के बीच-बीच में पहाड़ों के बड़े-बड़े चट्टान और भूआकृतियां बेतरतीब ढंग से पड़ी थीं। भूआकृतियों के इस बिखराव से उत्पन्न एकांतिकता लोगों की एकता में बड़ी बाधा थी। इससे नगर के नियंत्रण पर आधारित अलग राज्यों का संवर्द्धन होता गया। अतीत में इस क्षेत्र में कुछ महान सभ्यताओं का उदय हुआ था लेकिन या तो विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इन्हें नष्ट कर दिया गया या एकता नहीं होने के कारण इसका क्षरण हो गया। यद्यपि लैटिन उत्तरी इटली के मैदानी भागों को एक सूत्र में बांधने का काम करती थी, प्रमुख व्यापार पत्तनों, वेनिस और जेनोआ के उदय ने भी आल्प्स के पास यूरोप के अनेक भागों में लैटिन संस्कृति के प्रसार को गति दी। पंद्रहवीं सदी के अंतिम दशकों में सागरपारीय खोजों और पूरब में तुर्कों के विस्तार का डर भूमध्यसागर को 'बैक वाटर्स' में तबदील कर रहा था, जिस पर अब तक इतालवी राज्यों की अर्थव्यवस्थाएं फूल-फल रही थीं। इस समय से यूरोप के आर्थिक कार्यों के स्थान परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी। वाणिज्यिक गतिविधियां धीरे-धीरे उत्तर-पश्चिमी यूरोप के तट पर केंद्रित होने लगी थीं। इतना ही नहीं, इतालवी राज्य अंतरराष्ट्रीय युद्ध का प्रमुख क्षेत्र बन गया था जो 1494 से 1538 तक चला। लेकिन सोलहवीं सदी के आरंभ तक, नगर-राज्यों की अर्थव्यवस्था काफी हद तक शहरी केंद्रों के व्यापार और विनिर्माण कार्यों पर निर्भर थी (मिलान, वेनिस, जेनोआ, फ्लोरेंस, सियेना, रोम और कई अन्य महत्वपूर्ण नगर थे। इनमें से कई राज्यों ने सिल्क के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए शहतूत की खेती को प्रोत्साहन देना आरंभ कर दिया। इतालवी प्रायद्वीप के विभिन्न भागों में सिल्क विनिर्माण उद्योग स्थापित किए गए और भेड़ पालन आरंभ होने से ऊनी कपड़ों के उत्पादन में तेजी आई। सोलहवीं सदी के आरंभ में ही इतालवी राज्यों का आर्थिक गौरव समाप्तप्राय था।

1500 ई. में पश्चिमी यूरोप एक महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र के रूप में उभर रहा था जिसमें फ्रांस, ब्रिटेन, बेल्जियम और हालैंड शामिल थे। यहां आर्थिक परिवर्तन के आरंभिक संकेत देखे जा सकते थे। यह तटवर्ती क्षेत्र था। यहां पर्याप्त वर्षा होती थी और जमीन काफी उर्वर थी। उत्तरी फ्रांस में पेरिस के समीप नदी घाटी एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र था। इसमें पिकार्डो, ब्यूस और कॉक्स क्षेत्र आते थे। नदी के तलछटों के कारण यहां की जमीन अत्यधिक उर्वर थी। जलोढ़ मिट्टी के कारण पेरिस क्षेत्र खाद्यान्न उत्पादन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त था। पश्चिमी यूरोप में बाढ़ग्रस्त क्षेत्र स्वाभाविक लवण-पटल के रूप में विकसित हो गए। एक दीर्घ मंदी के बाद पंद्रहवीं सदी के अंत में कृषि उत्पादन फिर से



बढ़ने लगा था। दलदल भूमि का उपयोग करने के प्रयास किए गए जबकि कुछ क्षेत्रों में खुले मैदानों के स्थान पर बाड़ों के जरिए जोतों को सुदृढ़ किया गया। मध्य काल में उत्तरी फ्रांस में अत्यधिक संपन्नता थी लेकिन 'सौ वर्षीय युद्ध' (1337-1453) ने इसे नष्ट कर दिया। युद्ध के कारण आबादी में भारी कमी आई। तथापि इस विनाश के बाद दक्षिणी फ्रांस में शराब के उत्पादन के लिए अंगूर की खेती आरंभ की गई क्योंकि यह क्षेत्र भूमध्यसागरीय जोन में पड़ता है। इसने अपनी जीवन शैली और उत्तर की *लौंग दोई* के विपरीत *लौंग दोक* नामक अपनी ही स्थानीय भाषा का विकास किया। जहां उत्तरी फ्रांस पारंपरिक कानून को अपना रहा था, वहीं दक्षिणी फ्रांस रोमन कानून को मानता था। दक्षिणी में फ्रांस में मध्य मैसीफ़ क्षेत्र में उर्वर घाटियां थीं और खेती उन्नत किस्म की थी। इसके और दक्षिण में तटीय फ्रांस शराब उत्पादन में अग्रणी था। बहरहाल अठारहवीं सदी तक फ्रांस एक सशक्त सामंतवादी राज्य बना रहा। इंगलैंड में भी कृषि में प्रगति दिखने लगी थी और कुछ क्षेत्रों में भेड़ पालन के लिए खुले मैदानों को बाड़ों में तबदील किया जाने लगा था। शेष यूरोप से भौगोलिक रूप से कटे होने के कारण विनाशकारी युद्धों के पश्चात यहां आंतरिक विकास और राजनीतिक केंद्रीकरण को प्रोत्साहन मिला। पंद्रहवीं सदी के अंत में ग्रामीण कुटीर उद्योग उभर रहा था। विदेश व्यापार में स्पष्ट रूप से तेजी से विकास हो रहा था। यूरोप के इस भाग में सामंतवाद के पतन के संकेत नजर आ रहे थे।

## यूरोप में सामंतवादी संरचना

सोलहवीं सदी के आरंभ के वर्षों में यूरोप के आर्थिक जीवन में शुरू हुए प्रमुख परिवर्तनों की चर्चा करने के पहले इसके आर्थिक और राजनीतिक संघटन को समझना आवश्यक है जो सामंती व्यवस्था के अधीन सदियों से विकसित हुआ था। सामंतवाद की परिभाषा के बहस में पड़े बगैर यह जानना उपयोगी होगा कि किस प्रकार सामंती व्यवस्था ने सदियों तक यूरोप के समाज और इसकी अर्थव्यवस्था को संघटित किया।

पश्चिम में रोम साम्राज्य के पतन के परिणामस्वरूप पंद्रहवीं सदी के अंत में फ्रैंकिश राज्य का निर्माण हुआ। उर्वर मैदान, भूमि, पशु, हथियार और घोड़ों के प्रति फ्रैंकिश कुलीन वर्ग आकर्षित हुआ। इस काल में बड़े-बड़े जमींदारों का उदय हुआ। उनका किसानों पर नियंत्रण था। किसानों की सेवाओं के बदले वे उन्हें सुरक्षा प्रदान करते थे। यह सामंतवादी व्यवस्था की शुरुआत थी—रोम के *विला* और जर्मन ग्रामीण समुदाय का मिश्रण। समय बीतने के साथ यह व्यवस्था आर्थिक और सामाजिक संगठन के रूप में विकसित हो गई। पश्चिमी यूरोप में सामंती समाज एक पदानुक्रम के रूप में विकसित हुआ। इसमें एक श्रेणीगत व्यवस्था के अनुसार हर व्यक्ति को स्थान दिया गया। राजा इस पदानुक्रमीय व्यवस्था के शीर्ष पर था। वह अपने अनेक अधीनस्थों को भूमि (जागीर या इस्टेट) देता

था। ये अधीनस्थ ड्यूक और अर्ल के रूप में जाने जाते थे। वे सामंती लॉर्ड्स कहलाते थे और वे खुद भी अपनी जागीर का एक भाग छोटे लॉर्ड्स को देते थे जो बैरंस कहलाते थे। ये अनुदान सशर्त होते थे और सैन्य सेवा या अन्य सहायता के एवज में दिए जाते थे। ड्यूक्स और अर्ल्स राजा के वैसेल्स (रियाया) थे जबकि बैरंस ड्यूक्स और अर्ल्स के वैसेल्स (रियाया) थे। बैरंस के नीचे नाइट्स होते थे। नाइट्स के अधीन कोई वैसेल नहीं होता था। नाइट को छोड़कर प्रत्येक सामंती लॉर्ड अपने वरिष्ठ का वैसेल और स्वयं एक लॉर्ड भी था। ग्रामीण किसान समाज का निम्नतम वर्ग था और यह मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभक्त था। मुक्त धारक किसान (फ्री होल्डर्स) लॉर्ड्स से जमीन प्राप्त करते थे। वे इनका उपयोग और प्रबंधन स्वयं करते थे। वे लॉर्ड्स के लिए काम नहीं करते थे और कर का भुगतान करते थे। विलिंस (अर्द्ध कृषिदास) लॉर्ड्स द्वारा आबंटित भूमि की उपज का कुछ भाग लॉर्ड्स को देते थे और उनके लिए कुछ निश्चित दिनों तक काम करते थे। अन्यथा वे स्वतंत्र थे। ज्यादातर किसान सर्फ्स (कृषिदास) की श्रेणी में आते थे जिन्हें लॉर्ड्स की भूमि पर खेती करने की अनुमति कुछ निश्चित शर्तों पर दी जाती थी। कृषिदासों (सर्फ्स) का अपने मालिकों के प्रति दायित्वों और कर्तव्यों का यह संबंध ही सामंतवाद का सबसे महत्वपूर्ण पहलू था।

पश्चिमी यूरोप के सामंतवाद का अध्ययन और इसकी प्रस्तुति भिन्न-भिन्न रूपों में की गई है। अनेक ब्रिटिश और जर्मन विद्वानों ने वैधानिक और पारंपरिक सिद्धांतों के साथ-साथ सैन्य संगठन के पहलू पर भी बल दिया है। इन पारंपरिक सिद्धांतों पर सामंती रिश्ते आधारित थे। जॉन क्रिश्चली ने सामंतवाद के सैन्य धारण अधिकार के आयाम पर बल दिया है। इस दृष्टिकोण को सभी के द्वारा स्वीकार किया गया है। वह लॉर्ड और वैसेल्स (रियायों) के बीच निकट व्यक्तिगत संबंध का उल्लेख करते हैं। यह संबंध वैसेल द्वारा निष्ठा या स्वामिभक्ति की शपथ पर आधारित होता था। रूश्टन कॉलबर्न जैसे अन्य विद्वानों का मत है कि सामंतवाद मूलत: शासन करने का एक तरीका था न कि एक प्रकार की आर्थिक या सामाजिक व्यवस्था। इसका अनिवार्य लक्षण लॉर्ड और वैसेल्स के बीच संबंध था, जिसमें राजनीतिक सत्ता को व्यक्तिगत जायदाद समझा जाता था। इसकी प्रकृति व्यक्तिगत थी न कि संस्थागत। राजनीतिक दृष्टि से सामंतवाद अनिवार्यत: चरम राजनीतिक विकेंद्रीकरण का तंत्र था। इसमें सत्ता सामंती लॉर्ड्स के बीच विभक्त थी। साथ ही साथ राजा के अस्तित्व को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता था, वह चाहे कितना भी कमजोर हो। पंद्रहवीं सदी के अंतिम समय से अपेक्षाकृत कई बड़े राज्यों में इन शासकों के अधीन राजनीतिक केंद्रीकरण आरंभ हो चुका था।

सामंतवाद के अध्ययन में मार्क ब्लॉख का भी महत्वपूर्ण योगदान है। वह एक प्रख्यात फ्रांसीसी विद्वान थे। वह सामंतवाद को मानव संबंधों का तंत्र मानते हैं और इसका अध्ययन सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से करते हैं। ब्लॉख के अनुसार यूरोपीय सामंती व्यवस्था की



प्रमुख विशेषताएं थीं : ग्रामीण किसान, वेतन के बजाए सेवा भूमि (जागीर) का व्यापक उपयोग, विशिष्ट योद्धाओं के एक वर्ग की प्रमुखता, स्वामिभक्ति और सुरक्षा के संबंध, सत्ता का विकेंद्रीकरण और अन्य प्रकार के संगठन, परिवार और राज्य की मौजूदगी। उनका मानना है कि सामंतवाद राज्य के जबरदस्त रूप से कमजोर होने, खास तौर पर इसकी सुरक्षात्मक क्षमता कमजोर होने के साथ मेल खाता है। सामंती व्यवस्था का मतलब था कुछ शक्तिशाली लोगों द्वारा बहुत से कमजोर लोगों का भयानक आर्थिक दमन। इसमें सामाजिक अन्योन्यक्रिया पर व्यापक प्रतिबंध था। धन का परिचालन में इतना धीमा था कि वेतनभोगी अफसरशाही और ऐसी मानसिकता जो स्पृश्य और स्थानीय घृणा से जुड़ी हो संभव नहीं थी।' (ब्लॉख, *फ्यूडल यूरोप*, पृ. 443) इस प्रकार हम पाते हैं कि ब्लॉख ने सामंतवाद की परिभाषा गढ़ने की कोशिश नहीं की। उन्होंने एक विवरण प्रस्तुत किया और अपना ध्यान यूरोपीय सामंतवाद पर केंद्रित रखा। वह यह भी कहते हैं कि सामंतवादी यूरोप में सामंतवाद हर जगह समान तीव्रता के साथ उपस्थित नहीं था। यह कहीं भी अपनी संपूर्णता में नहीं था। किसी भी देश में पूरी ग्रामीण आबादी पूर्णरूपेण व्यक्तिगत और वंशगत निर्भरता के बंधनों पर आश्रित नहीं थी। राज्य की अवधारणा पूरी तरह कभी भी समाप्त नहीं हुई थी।

मार्क्स और एंगेल्स ने सामंतवाद का विवेचन वर्ग संगठन के रूप में नहीं किया लेकिन उनके सिद्धांत का अभिप्राय यह था कि वर्ग सामंतवादी समाज का मौलिक आधार प्रदान करता है। भूसंपत्ति पर आधारित वर्ग-संघर्ष (कुलीन-कृषिदास) ही सामंती संगठन को निर्धारित करता है। सामंतवाद को भूसंपदा की व्यवस्था की प्रकृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिनमें श्रम-विभाजन बहुत कम या नहीं के बराबर था। उत्पादन की स्थितियां आदिम जमाने की थीं। हालांकि सामंतवादी व्यवस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्याख्या मार्क्सवादी लेखनों में प्रस्तुत की गई है। इनमें सामंतवाद को उत्पादन की एक रीति माना गया है जो प्रधानत: कृषक समाज में ग्रामीण जोतदारों से सामंती भूमालिकों द्वारा सामंती लगान की वसूली पर आधारित थी। मार्क्स सामंती लगान को पूंजीपति के जमीन के किराए से अलग मानते थे। उनका कहना था कि सामंती लगान का स्तर सामंतवादी शासक वर्ग द्वारा गैरआर्थिक किस्म का दबाव डालने की क्षमता पर निर्भर करता है। गैरआर्थिक दबाव का अर्थ है कि लगान भूस्वामियों द्वारा बलप्रयोग द्वारा वसूला जाता था। कृषिदास प्रथा इस बल को वैध करार देती थी। किसानों को संपत्ति का अधिकार नहीं था। वे कानूनी रूप से स्वतंत्र नहीं थे हालांकि उन्हें जमीन के उपयोग का अधिकार विभिन्न शर्तों के तहत दिया जाता था। सामंतवाद का एक महत्वपूर्ण तत्व लॉर्ड-वैसेल (भूमालिक-रियाया) का संबंध था। यह जागीर (फिएफ) की अवधारणा पर आधारित था। दरअसल, फ्यूडलिज्म (सामंतवाद) शब्द की उत्पत्ति 'फ्यूड', 'फ्यूडल' या 'फिएफ' से हुई है। मध्यकाल की कानून की पुस्तकों में संपत्ति के इस रूप का उल्लेख है और फ्यूडल (सामंती) कानून ही

*फिएफ* (जागीर) कानून था। यह अन्य प्रकार की संपत्ति के कानूनों से भिन्न था। प्राचीन समय की जागीर जमीन का एक टुकड़ा थी जो लॉर्ड द्वारा वैसेल को उसकी सैन्य सेवा अथवा अन्य सहायता के एवज में दी जाती थी। लॉर्ड और वैसेल का संबंध निष्ठा की शपथ द्वारा व्यक्त होता था। हालांकि यह सामंतवादी समाज का सार्वभौम रूप नहीं था। यह मुख्य रूप से मध्य यूरोप और नार्मन इंगलैंड में विकसित हुआ। उस समय लॉर्ड और वैसेल का संबंध महत्वपूर्ण था क्योंकि अर्थव्यवस्था स्थानीय प्रकृति की होने के कारण राज्य की शक्तियां विखंडित हो गई थीं। संचार तंत्र बहुत कमजोर था। लॉर्ड की शक्तियों का प्रयोग सामंती दरबारों के माध्यम से भी किया जाता था। लॉर्ड्स अपने वैसेल्स के लिए दरबार लगाते थे, उनके विवाद निपटाते थे और सजा सुनाते थे। यह दरबार या न्यायालय एक प्रशासनिक अंग का भी कार्य करता था। कर लगाना और सैनिक शक्तियों का निर्माण करना इसके दायरे में था। ग्रामीणों पर लॉर्ड्स के नियंत्रण को बनाए रखने के लिए न्यायिक शक्ति भी आवश्यक थी। सामंती लॉर्ड्स के अधीन सत्ता के विकेंद्रीकरण के परिणामस्वरूप लॉर्ड्स द्वारा ग्रामीणों पर कुछ बाध्यताएं लगा दी गई थीं जैसे सभी किसानों को अपने अनाज को लॉर्ड की मिल में ही पीसना, लॉर्ड के वाइन प्रेस में ही अपने अंगूर की पिराई करना, उसके ओवेन में ही अपनी रोटी सेंकना और हर बार अपने उत्पादन में से निश्चित भाग नकद या वस्तु के रूप लॉर्ड को देना होता था। श्रम सेवा का शोषण मुख्य रूप से *दिमेन* (सामंत की अपनी व्यक्तिगत भूमि, जिसमें कृषियोग्य भूमि, घास का मैदान, अंगूर के खेत या कभी-कभी पनचक्की, आसवक और मयखाने शामिल होते थे) में होता था और एक लॉर्ड का दिमेन दूसरे से अलग आकार का होता था। कई इतिहासकार मानते हैं कि *दिमेन भूमि* में दी गई श्रम सेवाएं अनिवार्य सामंती कर का ही हिस्सा थीं। यह एक ऐसी पद्धति थी जिसके जरिए शासक वर्ग अतिरिक्त श्रम करवाता था। ये लेखक कहते हैं कि वस्तु रूप में और धन के रूप में कर का विकसित होना पश्चिमी यूरोप में उत्पादन की सामंती पद्धति के टूटने का संकेत था जबकि 16वीं से 18वीं सदी तक पूर्वी यूरोप में बड़ी-बड़ी निजी जागीरों और दास के रूप में श्रम कर का जारी रहना वहां सामंतवाद के जारी रहने और सुदृढ़ होने का संकेत देता है।

सामंती अर्थव्यवस्था पर बाजार के विस्तार का क्या प्रभाव पड़ा, इस बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। यह सच है कि यूरोप के अधिकतर भागों में सामाजिक उत्पादन (जैसे खाद्यान्न) का अधिकांश भाग बाजार के लिए नहीं होता था। अधिकांश स्थानीय उत्पादन का उपभोग किसान अपने घरों में करते थे या जमींदार (लॉर्ड) उनसे जबरन छीन लेते थे। 'दिमेन' कृषि का कुछ भाग सामंती जमींदारों द्वारा उपयोग किया जाता था। शेष भाग या कुछ भाग बाजार में भेजा जाता था। विपणन योग्य अधिशेष भिन्न-भिन्न कारकों जैसे युद्ध की स्थिति, प्राकृतिक आपदा आदि पर निर्भर करता था। सामंती शासक वर्ग की बाजार से जुड़ी अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं थीं जिनमें विलासिता की वस्तुएं शामिल थीं, जैसे



रेशम, मसाले, शराब, आभूषण आदि। इनकी मात्रा कम होती थी लेकिन कीमतें अधिक। इनका स्थानीय रूप से उत्पादन नहीं होता था बल्कि ये एशिया या अफ्रीका जैसे सुदूर क्षेत्रों से मंगाई जाती थीं। इन्हें खरीदने के लिए सामंती शासक वर्ग को धन की आवश्यकता होती थी जो कर तथा न्याय संबंधी लाभों के माध्यम से प्राप्त किए जाते थे। इस प्रकार राजा और उनके रियायों (वैसेल्स) के प्रशासनिक और राजनीतिक केंद्र इन कीमती वस्तुओं की मांग का सृजन करते थे। ये मांगें सामंती शक्ति के केंद्रों और धार्मिक पदाधिकारियों के स्थानों में होती थीं जो सामंती व्यवस्था से जुड़े होते थे। अत: मध्य युग के बीच के दिनों में शहरी विकास की प्रक्रिया, विपणन और विनिर्माण कार्यों का विस्तार हुआ और इनका असर यूरोपीय सामंती व्यवस्था पर पड़ना आरंभ हो गया। साथ ही यह भी नोट करना महत्वपूर्ण है कि मध्यकालीन शहरों से सामंती व्यवस्था को कोई मौलिक खतरा नहीं था। आरंभिक पूंजीपतियों के हितों और सामंती हित के बीच कोई टकराव नहीं बल्कि दोनों के हितों का संलयन था। उत्तरी इटली के बुर्जुआ परिवार सामंती शासकों और कुलीनों को खास तौर पर सामंती संकट के आरंभ में ऋण मुहैया कराते थे। सामंती समाज में वास्तविक शत्रुता सामंती कुलीन वर्ग और कृषिदासों के बीच थी। पेरी एंडरसन ने इस बात पर बल दिया है कि आर्थिक अधिशेष को हासिल करने के लिए राजनीतिक साधनों का उपयोग किए जाने के कारण सामंतवाद न तो एकदम आर्थिक तंत्र था न ही बिलकुल राजनीतिक। इसकी प्रमुख विशेषताएं जागीरदारी, जागीर और विभाजित संप्रभुता थी। अत: सामंतवाद एक ऐसी जमींदारी थी जिसमें सैन्य सेवा शामिल थी। इसमें सत्ता लॉर्ड्स के बीच विभाजित और विकेंद्रित थी।

## कृषि अर्थव्यवस्था पर ब्लैक डेथ्स का प्रभाव

यूरोप के मध्ययुग के बीच के समय में हुआ आर्थिक विस्तार चौदहवीं सदी के आरंभ में समाप्त हो गया। जनसंख्या और कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि 1310 के दशक से 1340 के दशक के बीच समाप्त हो गई। यूरोपीय समाज ने एक अभावग्रस्त समय का अनुभव किया। यह समय 'ब्लैक डेथ्स' के प्रसार के बाद का था। ब्लैक डेथ एक विनाशकारी प्लेग था। यह पूरे यूरोप में कुस्तुनतुनिया और पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र से इटली (1347), स्पेन और फ्रांस (1348), फिर स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया, जर्मनी और निचले ('लो') देशों (1349) और स्कैंडिनेविया और पोलैंड (1350) में फैल गया। इसने सामंती संकट को गंभीर जनसांख्यिकीय महासंकट में तबदील कर दिया। नतीजतन भारी संख्या में लोग इस महामारी की भेंट चढ़ गए। यह अनुमान किया जाता है कि आबादी में लगभग 12 से 60 प्रतिशत तक की कमी आ गई। यह कमी अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग थी। फिर भी अनुमान के मुताबिक जनसंख्या में लगभग 40 प्रतिशत की कमी आई। यह क्षति इतनी बड़ी थी कि इसकी भरपाई

में एक सदी से भी अधिक समय लग गया। ब्लैक डेथ ने लोगों के दैनिक जीवन को अवरुद्ध कर दिया। अनंतर पंद्रहवीं सदी के अंत तक सामंती युद्धों का यूरोपीय अर्थव्यवस्था पर कुप्रभाव जारी रहा। इसके महत्वपूर्ण परिणाम हुए। इस घटना द्वारा उत्पन्न कठिनाइयों ने कुछ समय के लिए हाहाकार की स्थिति पैदा कर दी। लेकिन पंद्रहवीं सदी के आरंभ से ही नए आर्थिक रूप (पैटर्न्स) उभरने लगे। उत्पादन में सुधार होते ही खाद्य पदार्थों की कीमतें कम होने लगीं क्योंकि जनसंख्या में कमी के कारण खाने वाले लोग कम थे। कुछ वर्षों तक कीमतों में उतार-चढ़ाव रहा लेकिन कुल मिलाकर पूरी सदी तक कीमतें स्थिर लेकिन कम रहीं। इस प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में नया विशिष्टीकरण आया। खाद्य पदार्थ के अन्य स्रोतों जैसे डेयरी उत्पाद और मांस की मांग बढ़ने लगी। अनुर्वर भूमि या प्रतिकूल जलवायु वाले क्षेत्रों में विशिष्ट उत्पादों के उत्पादन में अनिवार्य रूप से परिवर्तन आया। अत: विशिष्टीकृत क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाएं विकसित होने लगीं। इंगलैंड का कुछ क्षेत्र भेड़ पालन के द्वारा ऊन के उत्पादन में विशिष्ट था। फ्रांस में शराब के उत्पादन में विशिष्टता आई। उत्तरी यूरोप ने डेयरी फार्मिंग को संवर्द्धित किया जबकि बाल्टिक क्षेत्र खाद्यान्न का मुख्य केंद्र बनकर उभरा। ब्लैक डेथ से उत्पन्न कृषि संकट के परिणामस्वरूप शहरों और नगरों का सापेक्षिक महत्व बढ़ गया। कई छोटे-छोटे शहर विकसित हो गए। एंटवर्प, फ्लोरेंस, वेनिस, बार्सिलोना, लंदन, लियों और कई अन्य शहरों का महत्व बढ़ गया। व्यापार के विकास ने हैंसीएटिक लीग (जर्मनी की एक संस्था जो मुख्य रूप से बाल्टिक और उत्तरी सागर क्षेत्रों में व्यापार करती थी) और मर्चेंट एडवेंचर्स (इंगलैंड की संस्था जो फ्लैंडर्स के साथ व्यापार करती थी) जैसे व्यापार संगठनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया। पंद्रहवीं सदी के अंत तक दक्षिणी यूरोप के इतालवी शहर वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था के केंद्र बन गए।

कृषि और सामंती व्यवस्था की दृष्टि से आर्थिक संकट और जनसंख्या में कमी के कारण यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में भूमि संबंधों में मौलिक परिवर्तन आया। कुछ क्षेत्रों में सामंती जागीरदार और कृषिदास के बीच संबंधों में उल्लेखनीय नरमी आई। फ्रांस में नार्मंडी के मामले का हवाला देते हुए 'गी बुआ' ने ब्लैक डेथ के बाद सामाजिक विकास को सामंतवाद का संकट कहा है। अवेल जैसे अन्य लेखकों ने इसे कृषि संकट बताया है। इससे सामंती लॉर्ड्स और किसानों की सामाजिक स्थिति बदल गई। घटती जनसंख्या, खाद्यान्नों के घटते मूल्य और वास्तविक मजदूरी में वृद्धि के आरंभिक दौर के बाद 1460 के पश्चात स्थिति में थोड़ा सुधार आने लगा। वास्तविक मजदूरी दर में वृद्धि के कारण सामंती जागीरदार कठिनाई में आ गए (खास तौर पर 'सौ वर्षीय युद्ध' के दौरान) और इससे सामंती कर में भारी वृद्धि हुई। इन बदलती हुई स्थितियों के प्रति सामंती जागीरदारों की प्रतिक्रिया अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से हुई। इंगलैंड में सामंतों के करों में कमी आई। दीर्घकालीन खाद्यान्न मूल्यों में भी गिरावट आई और इसके साथ ही जमींदारों की आय भी



बहुत कम हो गई। अनेक जमींदारों ने अपनी आय में वृद्धि करने के लिए अपनी जमीनों में बाड़ लगाकर भेड़ पालन आरंभ कर दिया। इन क्षेत्रों में ग्रामीण किसानों से जमीन छीन ली गई। जबकि अन्य क्षेत्रों में सामंती कर नकद या वस्तु के रूप में वसूलने की प्रवृत्ति थी। अधिकांश यूरोपीय राज्यों में तीन-क्षेत्र प्रणाली (थ्री-फील्ड सिस्टम) थी। इससे कृषि क्षेत्र में काफी प्रगति हुई।

उत्तरी इटली के शहरी क्षेत्रों जैसे लौंबार्डी में कृषि की स्थिति बहुत खराब नहीं थी। शहर के लोग अपनी आय का कुछ भाग कृषि में निवेश करते थे। इस प्रकार वे फसल विशिष्टीकरण को प्रोत्साहित करते थे। सरकार नगरों में सिंचाई व्यवस्था संवर्द्धित करती थी जिससे पैदावार अधिक होती थी। हालांकि इटली के अन्य भागों में यह स्थिति नहीं थी। जर्मनी और पूर्वी यूरोप में कृषि क्षेत्र में परिवर्तन की प्रवृत्ति अभिजात वर्ग के अनुकूल थी। सामंती संकट ने पुनर्सामंतीकरण की प्रक्रिया को मजबूत किया था। सामंती जमींदारों द्वारा शोषण की गुंजाइश काफी बढ़ गई थी। उन्होंने अपनी स्थानीय न्यायिक शक्तियों का सहारा लिया और किसानों पर सेवा की व्यापक शर्तों को लादने में सफल भी हो गए। उनके अनिवार्य श्रम का उपयोग कर उन्होंने अपनी जागीर को सुदृढ़ किया। किसानों के आंदोलन करने की आजादी सीमित कर दी गई थी और उनका वंशगत दमन किया जाने लगा। दूसरी ओर पश्चिमी यूरोप में इसके विपरीत ग्रामीण किसानों की जमींदारों पर निर्भरता कम हो रही थी। पूर्वी यूरोप के जागीरदार किसानों से अधिक चुंगी वसूलते थे ताकि उनके घरेलू नौकरों की मजदूरी लागत कम रहे। एल्बी नदी के पूरब के क्षेत्रों में सामंत अपनी आर्थिक समस्याओं का निदान अलग तरीके से कर रहे थे। जैसा कि प्रादेशिक नियम कमजोर थे और जमींदारों को अपनी प्रतिनिधि सभाओं के जरिए अधिक शक्ति प्राप्त थी। अत: वे किसानों को आसानी से अपने नियम के अधीन कर सकते थे। वे न्यायिक सत्ता पर नियंत्रण करके और धार्मिक संरक्षण प्राप्त करके अपनी भूसंपत्ति का विस्तार कर सकते थे। पूर्वी यूरोप के दो महत्वपूर्ण राज्यों पोलैंड और लिथुआनिया में सामंती संकट की परिणति दासप्रथा के आरंभ और इसके सुदृढ़ीकरण के रूप में हुई। पोलैंड की संसद डेट के कानूनों के माध्यम से जमींदारों की न्यायिक और राजनीतिक शक्तियां काफी बढ़ गईं। सामंतों का संसद पर संपूर्ण नियंत्रण था। वे किसानों पर अपनी पूरी मनमानी करते थे। वे खाद्यान्न व्यापार को न केवल नियंत्रित करने में सफल हुए बल्कि इससे लाभ भी कमाया। अन्य पूर्वी प्रदेशों जैसे बोहेमिया, मोरेविया, हंगरी, रोमानिया और रूस में सामंतीकरण की प्रक्रिया तेज हुई और किसान जमींदारों की निजी संपत्ति जैसे हो गए।

राबर्ट ब्रेनर और अन्य कई विद्वानों ने पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के बीच आरंभिक आधुनिक यूरोप में कृषि प्रणालियों में इस दोहरेपन की व्याख्या प्रस्तुत की है। उनका मुख्य जोर ऐतिहासिक विकास के विभिन्न ढांचे पर है। इंगलैंड और फ्रांस जैसे पश्चिमी यूरोप के राज्यों में सोलहवीं शताब्दी तक शासक वर्ग जमींदारों पर अपना आधिपत्य जमाने में सफल

हो गए थे। वहीं रूस को छोड़कर पूर्वी यूरोप के राज्यों में राजनीति में राजाओं का नहीं बल्कि जमींदारों का दबदबा था। पूर्वी शासकों को सत्ता में रहने के लिए जमींदारों के समर्थन की आवश्यकता थी। वे जमींदारों को ग्रामीण किसानों का दमन करने के लिए छूट देने को मजबूर थे। 1518 में पोलैंड के राजा ने जमींदारों की प्रतिनिधि सभा को वचन दिया कि वह किसानों से अपने मालिकों के खिलाफ कोई अभ्यावेदन स्वीकार नहीं करेगा। कमजोर शहरी केंद्रों और शहरी बुर्जुआ की करीब-करीब अनुपस्थिति के कारण जमींदार वर्ग को यहां पश्चिमी यूरोप से कहीं अधिक शक्तियां प्राप्त थीं। पश्चिमी यूरोप में सामंती शुल्कों (ड्यूज) को सामंती लगान में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। व्यापार के विस्तार और बढ़ते मौद्रिक विनिमयों के कारण सामंतवाद की पुरानी संरचना टूटने लगी। इसके परिणामस्वरूप शहर और गांव के बीच श्रम का विभाजन होने लगा। नगरों का विकास होने से खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ी। यह परिवर्तन *दिमेन* भूमियों के मामले में अधिक द्रष्टव्य था जो दासत्वमूलक श्रम के मुख्य केंद्र थे। बड़े जमींदार अनिवार्य सेवाओं जैसे कॉर्वे या बेगार (भूमि के उपयोग के बदले मालिक को दी जाने वाली सेवा) और 'बून वर्क' (निर्धारित दिनों के बजाए कुछ निश्चित मौसमों में एक टास्क के रूप में किया जाने वाला कार्य) के बदले मौद्रिक शुल्क लेते थे। पश्चिमी यूरोप के कुछ भागों में ग्रामीण किसानों की स्थिति सुधर गई। तथापि ग्रामीण समाज का प्रत्येक समूह इन परिवर्तनों का समान रूप से लाभ नहीं उठा सका। पंद्रहवीं सदी के अंत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन जो देखा गया वह निरंकुश राजशाहियों का उदय था। पश्चिमी यूरोप में निरंकुश राजाओं के अधीन सामंती संरचना सुरक्षित थी लेकिन किसानों की पारंपरिक स्थिति में परिवर्तन लाए बिना उन पर राज्य का नियंत्रण स्थापित हो गया। जागीरदारी प्रणाली और दासप्रथा के धीरे-धीरे पतन होने के फलस्वरूप किराए के श्रमिक का उदय हुआ क्योंकि जमींदार सेवा के बजाए धन लेने में अधिक रुचि दिखाते थे। *दिमेन* भूमि पर ग्रामीण किसानों द्वारा खेती कार्वे या बेगार के जरिए नहीं बल्कि नकदी धन लेकर की जाती थी। इनमें से कई लोगों का सामाजिक दर्जा ऊंचा हो गया। वे धनी किसान या छोटे जमींदार या कुलीन भी बन गए। धीरे-धीरे जमीन लेने का संबंध बदलने लगा। गांव के किसान मेटायर्स या बंटाईदार हो गए।

अत: 1500 ई. तक सामंती संरचना के अंतर्गत कठोर ग्रामीण जीवन चक्र पश्चिमी यूरोप के कुछ भागों में टूट रहा था। वहीं पूर्वी यूरोप और मध्य यूरोप के अधिकांश में सामंती व्यवस्था जमींदारों के प्रयास से और भी सुदृढ़ हो रही थी। अटलांटिक तट के किनारे व्यापार के विस्तार ने कृषि के वाणिज्यीकरण को संवर्द्धित किया। उन स्थानों पर परिवर्तन का रुख पूंजीपतियों की दिशा में था। वहीं शेष यूरोप को इस सामंती संरचना को तोड़ने में दो से तीन सदी का समय और लगा। कृषि के विकास का स्तर भिन्न-भिन्न होने के कारण यूरोप में आर्थिक विकास असमान हुआ।



## शिल्प और उद्योग की स्थिति

जनसंख्या ह्रास की लंबी अवधि के बाद 1460 के दशक से जनसंख्या वृद्धि के संकेत मिलने लगे थे। हालांकि क्षेत्र वार जनसंख्या वृद्धि अलग-अलग थी लेकिन सबसे अधिक वृद्धि शहरों और नगरों में देखी गई। एंटवर्प की आबादी 1440 ई. के 20,000 से बढ़कर 1500 ई. में 50,000 हो गई। सोलहवीं सदी के दौरान यह यूरोप का मुख्य वाणिज्यिक शहर बनकर उभरा। इसी प्रकार 1460 और 1600 के बीच सिसली और नेपल्स की जनसंख्या दोगुनी हो गई। इसी अवधि के दौरान रोम की आबादी 50,000 से बढ़कर लगभग 1,00,000 हो गई। इन शहरों की जनसंख्या वृद्धि का महत्व इस बात को लेकर अधिक था कि इससे न केवल खाद्यान्नों की बल्कि विनिर्मित वस्तुओं की भी मांग बढ़ी। इतना ही नहीं इससे शिल्प और उद्योग के विकास और प्रसार में काफी मदद मिली। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमें सोलहवीं सदी में सबसे तेजी से विस्तार देखा गया। एक महत्वपूर्ण शहरी संगठन जो विनिर्माण की गतिविधियों का नियंत्रण करता था, वह शहरी गिल्ड था।

मध्यकालीन शहरों में गिल्ड सामाजिक और आर्थिक संगठनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप था। यह व्यावसायिक संगठन था। इसका मुख्य कार्य विनिर्माण और व्यापार से जुड़े अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करना और उन्हें संवर्द्धित करना था। यह कामगारों की दुनिया में सकारात्मक भूमिका अदा करता था। अपने सदस्यों और उनके परिवारों को कठिनाई और रुग्णता के समय में यह सहायता करता था। व्यापारी गिल्ड और शिल्पकार गिल्ड अलग-अलग थे। व्यापारी गिल्ड का मुख्य कार्य अपने सदस्यों के लिए स्थानीय बाजारों के एकाधिकार को बरकरार रखना था। ऐसा करने के लिए यह कठिन शर्तें लगाता था जैसे शहर में विदेशी व्यापरियों द्वारा व्यापार पर प्रतिबंध लगाना। इस प्रकार यह बिक्री में अपने सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करता था, अपने मूल्य निर्धारित करता था और अपने उत्पादों के विपणन का नियंत्रण करता था। ठीक इसी प्रकार शिल्पकार गिल्ड उत्पादन पक्ष का नियंत्रण करता था और उत्पादन की संपूर्ण प्रक्रिया का निरीक्षण करता था। यह उस्ताद (मास्टर) शिल्पकारों द्वारा नियंत्रित होता था जो अपने विशिष्टीकृत क्षेत्र के विशेषज्ञ होते थे। शिल्प गिल्ड की दूसरी श्रेणी के सदस्य कामगार होते थे। ये अपना काम जानते थे फिर भी वे उस्तादों और शिक्षु कार्मिकों के अधीन काम करते थे। प्रत्येक शिक्षु कार्मिक को वर्ष के कुछ निश्चित दिनों तक उस्ताद (मास्टर) के अधीन कार्य करना पड़ता था और उनसे काम सीखना होता था। वे गिल्ड के मास्टर तभी बन सकते थे जब वे कोई श्रेष्ठ कृति (मास्टर पीस) का उत्पादन करें और सभी मास्टर शिल्पकार इसका अनुमोदन करें। ये गिल्ड अपने उत्पादों पर अपना एकाधिकार रखते थे और बाहर के लोगों को व्यापार में प्रवेश नहीं करने देकर प्रतिस्पर्द्धा को रोकते थे। वे कार्मिकों की न्यूनतम मजदूरी के लिए संघर्ष करते थे, अपने उत्पादन के बाजार मूल्य का निर्धारण करते थे और उत्पादन के हर

चरण और इसकी गुणवत्ता का नियंत्रण करते थे। यूरोप के अधिकांश शहरों में वे बहुत शक्तिशाली थे। पंद्रहवीं सदी के अंत तक विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन पर गिल्ड्स का दबदबा बरकरार रहा। पंद्रहवीं सदी के अंत में वस्त्र क्षेत्र के संगठन और कुल उत्पादन में सर्वाधिक नाटकीय परिवर्तन आया। इसका यूरोपीय अर्थव्यवस्था के विस्तार में काफी बड़ा योगदान था। कुछ भागों जैसे फ्लैंडर्स, इंगलैंड और नीदरलैंड में वस्त्र विनिर्माण की गतिविधियां शहरी कार्यस्थलों से निकलकर ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचने लगी थीं। यह व्यावसायिक संघों (गिल्ड्स) के सख्त नियंत्रण से बचने के लिए किया जा रहा था ताकि उत्पादन बड़े पैमाने पर और अपेक्षाकृत कम लागत पर किया जा सके। दूसरी ओर इतालवी नगरों में शहरी कार्यस्थलों और शहरी कपड़ा बाजारों पर गिल्ड्स का नियंत्रण और दबदबा था। गिल्ड के विनियमन से कपड़ों की गुणवत्ता तो बरकरार थी लेकिन इन व्यावसायिक संगठनों के बाजार पर नियंत्रण के फलस्वरूप उनके उत्पादनों की कीमतें काफी अधिक थीं ताकि उनकी लाभ की गुंजाइश अत्यधिक हो। ग्रामीण क्षेत्रों के उद्योगों ने गुणवत्ता और तकनीक के मामले में गिल्ड के नियंत्रण को समाप्त कर दिया। इससे हलके और सस्ते ऊनी वस्त्रों का उत्पादन संभव हो सका और वस्त्र उद्योग गतिशील और समुन्नत होने लगा। सोलहवीं सदी के दौरान इंगलैंड और नीदरलैंड की आर्थिक संपन्नता काफी हद तक वस्त्र निर्माण उद्योग द्वारा हुई थी।

रोजगार और उत्पादन की दृष्टि से वस्त्र क्षेत्र आर्थिक गतिविधि का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था। वस्त्र विनिर्माण सर्वाधिक बड़ा उद्योग था लेकिन इसका संगठन जटिल था। पूरी पंद्रहवीं सदी में इतालवी राज्यों का वस्त्र उत्पादन में प्रमुख स्थान रहा। हालांकि पंद्रहवीं सदी के अंत से पुराने केंद्र पतन के रास्ते पर थे जबकि कुछ नए केंद्र उभर रहे थे। फ्लोरेंस वस्त्र उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। चौदहवीं सदी में इसका वार्षिक वस्त्र उत्पादन 1,00,000 बोल्ट्स था जो 1500 ई. तक घटकर 30,000 बोल्ट्स हो गया। इसका अभिप्राय यह नहीं था कि फ्लोरेंस का औद्योगिक ह्रास हो रहा था क्योंकि ऊन क्षेत्र में गिरावट की भरपाई रेशम उत्पादन से हो जा रही थी। वाइप्रेस, घेंट और ब्रुगेस स्थित नीदरलैंड के पुराने ऊनी वस्त्र उद्योगों में गिरावट शुरू हो गई थी लेकिन नीदरलैंड के भीतर नए प्रकार के ऊनी धागों का उत्पादन आरंभ हो गया था। ये धागे सस्ते, हलके और अभिजात वर्ग के बाहर के लोगों की मांग के अनुरूप थे। चौदहवीं सदी में इंगलैंड अनिवार्य रूप से कच्चे ऊन का निर्यातक था। पंद्रहवीं सदी के दौरान इसने अच्छी गुणवत्ता वाले ऊनी उत्पादों का निर्यात आरंभ कर दिया और सोलहवीं सदी के मध्य तक इंगलैंड प्रमुख वस्त्र उत्पादक बन गया। दरअसल इंगलैंड का आर्थिक परिवर्तन ऊनी वस्त्र उत्पादन से जुड़ा था। जहां ऊन के निर्यात में निरंतर गिरावट रही वहीं कपड़े के निर्यात में लगातार वृद्धि हुई। 1503 और 1509 के बीच इंगलैंड ने 81,835 बोल्ट्स कपड़े और 5,000 सैक ऊन का निर्यात किया। 1540 और 1548 के बीच कपड़े का वार्षिक निर्यात बढ़कर 1,00,254 बोल्ट्स हो गया। इंगलैंड के वस्त्र



उद्योग के विकास की एक बड़ी वजह जलशक्ति की उपलब्धता थी। इससे विनिर्माता नई यांत्रिकी fulling मिल्स का उपयोग करने में सक्षम हो गए। इससे कामगार पारंपरिक विधि की तुलना में अधिक वस्त्र का निर्माण कर सकते थे। ग्रामीण विनिर्माण गतिविधि न केवल अपेक्षाकृत कम महंगी थी बल्कि इससे कम व्यस्त समय में किसानों और उनके परिवारों को पार्ट-टाइम रोजगार भी मिलता था। वस्त्र उत्पादन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इंगलैंड, नीदरलैंड्स और जर्मनी जैसे कई स्थानों में वस्त्र निर्माण कार्य शहरों से दूर गांवों की ओर अग्रसर था। फलस्वरूप ग्रामीण कुटीर उद्योग का उदय हुआ। यह गुणवत्ता और तकनीक के मामले में गिल्ड के नियंत्रण से अपेक्षाकृत मुक्त था। परिणामस्वरूप अन्य यूरोपीय शहरों की तुलना में यहां उत्पादन लागत कम थी।

औद्योगिक गतिविधि का अन्य क्षेत्र खनन और धातुकर्म था। आम तौर पर चार या पांच मजदूरों के उद्यम प्राय: सहकारिता के आधार पर लोहा, तांबा, चांदी और कोयले का उत्पादन करते थे। हालांकि ज्यों-ज्यों इन धातुओं की मांग बढ़ी खानों की गहरी तहों के दोहन के लिए और अधिक मशीनरी की आवश्यकता पड़ी और नई प्रक्रियाओं का विकास हुआ। अपेक्षाकृत बड़ी इकाइयों के प्रबंधन के लिए पूंजीपति संगठनों के आदिम रूप अस्तित्व में आए। इन इकाइयों में अधिक संख्या में मजदूर काम करते थे। मध्य यूरोप में स्थित शहरों खास तौर पर जर्मन राज्यों ने लोहा, चांदी और तांबा जैसे खनिजों का बड़े पैमाने पर दोहन आरंभ कर दिया। लगभग 300 मीटर की गहराई में धातु अयस्क का खनन किया जाता था। इसके लिए अधिक विकसित संगठन और उपकरण की आवश्यकता थी। अयस्क का खनन महंगा होता जा रहा था और इसमें भारी निवेश की आवश्यकता थी। इसलिए कुछ बड़े व्यापारियों ने इस क्षेत्र में निवेश करना आरंभ कर दिया। खनन का पुनर्गठन पंद्रहवीं सदी में आरंभ हुआ जब पूंजीपति व्यापारियों ने उत्पादन का नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया। जब तक खनिज ऊपरी सतह के नीचे से निकाले जा रहे थे, इसके लिए उन्नत प्रौद्योगिकी या बड़े वित्तीय निवेश की आवश्यकता नहीं थी। जमीन की गहराई में खनन के लिए उच्च स्तर के उपकरण लगाए जाने और इसके रखरखाव की आवश्यकता थी। यह परिवर्तन हर्ज पहाड़ों और बोहेमिया की चांदी की खानों में, आल्प्स में ट्रायोलिन की तांबा की खानों में और हंगरी की सोने और चांदी की खानों में स्पष्ट था। मुक्त कारीगर वेतन मजदूर में बदल गए और ज्यों-ज्यों खुदाई का काम गहरा होता गया, उनकी संख्या बढ़ती गई। पानी बाहर निकालने के लिए नई तकनीक अपनाई गई। पंपिंग मशीन हार्सपावर चालित थे। इस क्षेत्र के अभिजात वर्ग और शासकों को भी यहां के निवासियों की संपन्नता से लाभ हुआ। भारी निवेश की आवश्यकता के कारण अलग-अलग अकेले व्यापारी खनन कार्य नहीं चला सकते थे। अत: एक प्रकार का संयुक्त स्टॉक प्रचालन अस्तित्व में आया। इसमें खान के स्टॉक को शेयरों में बांट दिया गया जिसे *क्यूक्सेन* कहा जाता था। ये शेयर 64 या 128 के गुणक में थे। 1580 में अगस्टस प्रथम ऑफ सैक्सनी 2,822 क्यूक्सेन के मालिक थे। बहरहाल सोलहवीं सदी के दौरान खनन कार्य की भारी

लागत, घटते लाभ, श्रमिक समस्या (जो 1525-26 में हंगरी में भी उठ खड़ी हुई) और अमरीका से बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के परिणामस्वरूप अनेक खानों से पूंजी वापस ली जाने लगी। टाईरॉन में स्वाज इसका अपवाद था। यहां तांबा और चांदी की खानों पर फ्यूगर्स का नियंत्रण था। उनके अधीन 12,000 कामगार थे और अन्य 500 से 600 मजदूर सुरंगों से पानी बाहर निकालने के काम में लगे थे। राइन घाटी के किनारे के प्रदेश और डैन्यूब के ऊपरी विस्तार क्षेत्र धातुओं के मुख्य उत्पादन केंद्र बनकर उभरे। इस क्षेत्र में वस्त्र उद्योग का भी विकास हुआ, जो धीरे-धीरे गांवों की ओर स्थानांतरित होने लगा।

चौदहवीं सदी के अंत में विकसित हो रहे अन्य उद्योगों में शीशा विनिर्माण और प्रिंटिंग प्रेस महत्वपूर्ण थे। 1430 और 1440 के दशक के दौरान जर्मनी के मेंज में जॉन गुटेनबर्ग ने कुछ प्रयोग किए। इन प्रयोगों की परिणति 1453 ई. के आसपास प्रिंटिंग प्रेस की खोज में हुई। यद्यपि ब्लॉक प्रिंटिंग और पेपर प्रिंटिंग के बारे में चीन में सदियों से जानकारी थी लेकिन यह लकड़ी के ब्लॉक्स के जरिए की जाती थी। स्वर्णकार परिवार के गुटेनबर्ग ने एक घूमने लायक धातु टाइप बनाया। इस खोज के साथ दो नाम और जुड़े हैं—जॉन फ़स्ट और पीटर शॉफ़र। प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना वाणिज्यिक और अकादमिक जगत में बहुत बड़ी घटना थी। इसका प्रसार यूरोप के विभिन्न भागों में खास तौर पर इतालवी शहरों में होने लगा। पंद्रहवीं सदी के अंत तक पुस्तक प्रकाशन कई गुना बढ़ गया। यद्यपि अधिकांश यूरोपीय शहरों के अपने प्रिंटिंग प्रेस थे। लेकिन वेनिस सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। यहां लगभग 150 प्रिंटिंग प्रेस मौजूद थे।

यूरोप के कुछ भागों में पोत परिवहन उद्योग और आयुधागार उभर रहा था। पंद्रहवीं सदी तक यह उद्योग यूरोप के दक्षिणी भागों में विकसित हो चुका था, खास तौर पर वेनिस में, जो मुख्य वाणिज्यिक केंद्र था। इसके पश्चात सोलहवीं सदी में अटलांटिक तट वाणिज्यिक गतिविधियों का केंद्र बन गया। यद्यपि निर्माण कार्य काफी पहले आंरभ हो चुका था, इसका विस्तार 1476 में शुरू हुआ। वैनिसियाई आयुधागार पूंजीवादी उत्पादन पद्धति के तर्ज पर पोतों का निर्माण, मरम्मत और इन्हें शस्त्रों से लैस करता था। लगभग 1,000 मजदूर एक स्थान पर कार्य करते थे। 1560 ई. के पहले इसे सबसे बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान माना जाता था। कार्यस्थल और इसके प्रचालनों पर आयुधागार के लाड्र्स और आयुक्तों का नियंत्रण था। वे प्रत्यक्ष रूप से राज्य के नियंत्रण में होते थे। इनमें से कई अधिकारियों को राज्य द्वारा वेतन और घर दिए जाते थे। यहां काम करने वाले कामगार अपने पेशे में कुशल होते थे। वे शिल्प गिल्ड्स के सदस्य होते थे लेकिन निजी पोत निर्माताओं के लिए भी काम करते थे। इनमें लोहार, बढ़ई, पाल निर्माता और पुली निर्माता शामिल थे। बहरहाल वेनिस में सभी पोत राज्य के आयुधागार के नहीं थे। दरअसल अधिकांश व्यापारी पोत निजी तौर पर निर्मित थे और उन पर निजी स्वामित्व था। पंद्रहवीं सदी के अंत में औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना के साथ पुर्तगाल और स्पेन में भी पोत परिवहन उद्योग का उदय हुआ।



## व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियां

पंद्रहवीं सदी के अंत में यूरोपीय आर्थिक इतिहास में एक नया मोड़ आया। इस दौरान लंबी दूरी का व्यापार शुरू हुआ और दुनिया के सुदूर क्षेत्रों में उपनिवेशों की स्थापना शुरू हुई। इस पहलू की चर्चा दूसरे अध्याय में विस्तार से की गई है। यहां मुख्य जोर पंद्रहवीं सदी के अंत में उपस्थित व्यापार की प्रकृति और व्यवसाय संगठन के पैमाने पर है। यूरोप के भीतर विनिमय के महत्वपूर्ण रूपों के पैमाने बढ़ रहे थे जिनमें कच्चे माल, खाद्य और विनिर्मित उत्पाद और अनेक विलासिता की वस्तुएं शामिल थीं।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार का आरंभ समुद्री यात्राओं और खोजों के कारण हुआ, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि यूरोप पहले ही भूमध्यसागर या भूमि मार्गों के जरिए एशिया और अफ्रीका से विलासिता की वस्तुओं का आयात कर रहा था। लेकिन यह अवधि अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विस्तार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, खास तौर पर सागरों से होकर जलमार्गीय व्यापार में विस्तार की दृष्टि से। पंद्रहवीं सदी में दक्षिणी जर्मनी के शहरों और बोहेमिया की आर्थिक शक्ति बढ़ रही थी। इस कारण वे इटली के दबदबा वाले भूमध्यसागर के व्यापार और हैंसिएटिक लीग के प्रभुत्व वाले उत्तरी सागर के व्यापार को चुनौती देने में सक्षम हो सके। हैंसिएटिक व्यापारियों ने राजनीतिक और सैन्य तरीके से लिथुआनिया से लेकर बाल्टिक सागर तक उत्तरी मार्गों में व्यापार का एकाधिकार प्राप्त कर लिया था लेकिन दक्षिण जर्मन के व्यापारियों ने पूरे मध्य यूरोप में अपना प्रभाव स्थापित और प्रसार करने के लिए एकाधिकार व्यापार के इतालवी तरीकों को अपनाया। इंगलिश व्यापारियों का एक अन्य राज्य द्वारा संरक्षण प्राप्त एकाधिकारपरस्त संगठन मर्चेंट एडवेंचरर्स था। इसने अपना प्रभाव फ्लैंडर्स तक बढ़ा लिया था और हैंसिएटिक लीग की स्थिति को सफलतापूर्वक चुनौती दी थी। पुराना वाणिज्यिक और वित्तीय केंद्र बेल्जियम के ब्रुगेस में स्थित था। अंगरेज, इतालवी और हैंसिएटिक व्यापारी यहां ऊन, अनाज, मछली और मसाले जैसी वस्तुएं थोक में लेकर आते थे। सदी के अंत तक नीदरलैंड में एंटवर्प यूरोप के मुख्य केंद्र के रूप में बहुत तेजी से ब्रुगेस का स्थान ले रहा था। बहरहाल यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार नहीं था। यह यूरोप का स्थानीय और क्षेत्रीय व्यापार था जो बाजार के विस्तार का आरंभिक आधार दे रहा था।

पंद्रहवीं सदी के दौरान यूरोप के अधिकांश शहरों में स्थानीय बाजार विकसित हो चुके थे। यहां पास-पड़ोस के क्षेत्रों के उत्पाद बेचे और खरीदे जाते थे। कुछ बड़े शहरों ने व्यापार को संगठित और संचालित करने के लिए बाजारों का विकास कर लिया था। इन बाजारों-शहरों से यूरोप के भीतर दूर के क्षेत्रों से उत्पाद मंगाए जाते थे या भेजे जाते थे। यूरोप के कुछ बाजारों में पूरब के विदेशी उत्पादों का व्यापार होता था। यह व्यापार अधिकांशत: स्थानीय, क्षेत्रीय या यूरोप के भीतर होता था। यद्यपि यूरोप का एक बड़ा भाग अभी भी सामंती व्यवस्था

के प्रभाव में था और जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, सामंतवाद के अधीन व्यापार सीमित था, फिर भी अंतरक्षेत्रीय संपर्क के विस्तार से यूरोपीय क्षेत्र नजदीक आ रहे थे। व्यवसाय का बड़ा हिस्सा सामान्य स्थानीय उत्पादों का था, जो स्थानीय लोगों द्वारा बेचे और खरीदे जाते थे या उनका लेन-देन किया जाता था। विनिमय के प्रमुख उत्पाद कपड़े, खाद्य पदार्थ और पशु होते थे। इनका लेन-देन कोलोन मेला जैसे स्थानीय मेलों के जरिए होता था। ये मेले पूरी तरह ग्रामीण प्रकृति के होते थे, जो एक वर्ष में तीन या चार बार लगते थे। इसी प्रकार का एक मेला मेडिना डेल केंपो में लगा करता था। यह कस्तील के शासकों के संरक्षण में लगने वाला गड़ेरियों का मेला था। ज्यों-ज्यों शहरों का आकार बढ़ा और आबादी बढ़ी, खाद्यान्नों, सब्जियों और शराब जैसे खाद्य उत्पादों की मांग भी बढ़ी। इसकी पूर्ति न केवल तुरंत पास के बल्कि दूर के क्षेत्रों से भी की जानी थी। इसी प्रकार विश्वविद्यालयों, कैथेड्रल शहरों और प्रशासनिक केंद्रों के उदय ने बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया। इन स्थानों पर बाजार की संरचना ने स्थायी रूप ले लिया और इसका प्रसार हुआ। यहां थोक विक्रेता और खुदरा विक्रेता, छोटे व्यापारी और बड़े व्यापारी बड़ी संख्या में बन गए। इनमें से कई बाजारों में दैनिक खपत की वस्तुओं का आयात किया जाता था, जहां इन्हें एकत्र किया जाता और उचित दुकानों से बेचा जाता था। स्थानीय उद्योग के उत्पाद उन उत्पादों से बेचे जाते या विनिमय किए जाते जो आसपास में उपलब्ध नहीं होते थे। इस प्रकार बाल्टिक वस्तुओं जैसे खाद्यान्न और जंगल के उत्पादों के बदले में स्पैनिश ऊन नीदरलैंड्स और इटली भेजे जाते थे। हंगरियन तांबा जर्मनी और फ्रांस भेजा जाता था, इंगलिश ऊन उत्तरी यूरोप और बाल्टिक राज्यों में भेजा जाता था। बदले में ये नमक, शराब, मछली, सब्जियां, तेल, फल और रंजक वस्तुएं अन्य स्थानों से खरीदते थे। नमक की बहुत अधिक मांग थी। इसका उत्पादन महाद्वीप के कई भागों में लेकिन कम मात्रा में होता था। ल्यूबेक के दक्षिण लूनबर्ग में एक बड़ा नमक उद्योग विकसित किया गया। इस क्षेत्र में उत्पादित नमक दूर-दूर क्षेत्रों में बेचा जाता था। यह स्थानीय लोगों की आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया। पोत परिवहन उद्योग के विस्तार से लकड़ी एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक उत्पाद बन गई। संक्षेप में कहा जाए तो कई स्थानों में पारंपरिक मेलों का स्थान शहरों के नियमित बाजार ले रहे थे। आम तौर पर बड़े व्यापारी केवल व्यापार की गतिविधि में विशिष्टता हासिल करने लगे जबकि खुदरा व्यापार दुकानों के लिए छोड़ दिया गया। पंद्रहवीं सदी में भूमि परिवहन खराब सड़कों के कारण गंभीर रूप से सीमित था। सदियों तक परिवहन का रूप नहीं बदला। इन स्थितियों में आंतरिक जलमार्ग, नदी मार्ग से यात्रा, गाड़ियों के रक्षदल और पालतू जानवरों का उपयोग व्यापार में सहायक था। अंतर्देशी व्यापार के सामने कई गंभीर समस्याएं थीं जैसे—लूटपाट का खतरा, राज्यों या सामंतों के बीच लड़ाई, प्रतिकूल मौसम जैसे बाढ़, कड़ाके की सरदी और भारी सीमा कर क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था। यह राइन घाटी के मामले में देखा जा सकता है। यहां सौ वर्षों के भीतर सीमाशुल्क



वसूली फाटकों की संख्या 35 से बढ़कर लगभग 70 हो गई। केंद्रीकृत निरपेक्ष राज्यों के उदय से राजनीतिक स्थिरता और व्यापारियों को अपेक्षाकृत सुरक्षा मिली। इससे व्यापार में तेजी से विकास हुआ। पंद्रहवीं सदी के अंत में जहाज निर्माण कला में भारी उन्नति हुई। इससे भार वहन की क्षमता और लंबी यात्राएं करने की क्षमता बढ़ गई। इस दिशा में पुर्तगाली अग्रणी थे। अपेक्षाकृत बड़े और तेज चलने वाले जहाजों के निर्माण होने से नौयात्रा संबंधी उपकरणों में भी सुधार हुआ। समुद्री जहाजों के मामले में मालभाड़ा लागत भूमि परिवहन की तुलना में कम होती थी। इससे प्रति उत्पाद कुल लागत में काफी कमी आ गई।

व्यापार में विस्तार से व्यवसाय संगठन का पैमाना भी बढ़ा। इतालवी राज्यों में व्यवसाय इंटरप्राइज और वाणिज्यिक संगठन की तकनीकों की पहले से ही एक पुरानी परंपरा थी। हालांकि यह मानना गलत होगा कि ये संगठन आधुनिक पूंजीवादी तंत्र थे क्योंकि अभी पूंजी की बुनियादी संरचना पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी। साझेदारी के आगे कोई कारपोरेट संगठन नहीं था। इतालवी बड़े व्यापारियों खास तौर पर फ्लोरेंस के व्यापारियों के पास निवेश के लिए नकदी पूंजी का बहुत बड़ा खजाना था। ये व्यापारी भूसंपत्ति की पूंजी मुहैया कराते थे, वस्तुओं का व्यापार करते थे, कपड़े और शस्त्रों का विनिर्माण करते थे, खनिज संसाधनों के विकास पर पैसा लगाते थे, यहां तक कि सैन्य अभियानों में या धार्मिक पदों की खरीद में निवेश करते थे। इतालवी परिवारों द्वारा बहुत बड़ी धनराशि पियासेंजा, अस्ती, सिएना, लूका और फ्लोरेंस में एकत्र की जा रही थी। इस बैंकिंग गतिविधि की एक उल्लेखनीय विशेषता कंपनी या केस (हाऊस) के रूप में इसका संगठन थी। अनेक अस्थायी व्यापार निगम भी थे जैसे *कमेंदाज* (commendas) या *सोसाइटाज* (societas)। इन निगमों में एक प्रकार की साझेदारी होती थी, जिनमें निवेशक दो-तिहाई पूंजी मुहैया कराते थे जबकि बाकी पूंजी एजेंट या आढ़तिया लगाते थे। एजेंट्स या आढ़तिया बाजार का प्रबंधन करते थे और वे भुगतान संग्रह के लिए जिम्मेदार थे। लाभ निवेशकों और आढ़तियों के बीच बराबर रूप से बांट लिया जाता था। हेनरी लुका के अनुसार इस प्रकार के व्यापार निगम बारहवीं सदी में जेनोआ और कई अन्य इतालवी शहरों में मौजूद थे। एक दूसरे प्रकार का व्यवसाय संगठन *एकमोडिशियो* (accommodatio) था, जिसमें निवेशक सारी पूंजी निवेश करते थे और आढ़तिया केवल सामान बेचने और भुगतान इकट्ठा करने का काम करते थे। इसके लिए उन्हें लाभ का एक चौथाई हिस्सा मिलता था। ये सभी अस्थायी संगठन होते थे। इनका निर्माण केवल एक या निश्चित समुद्री यात्राओं की संख्या के लिए किया जाता था।

पंद्रहवीं सदी के अंत में व्यापार का विस्तार होने से बड़ी राशि के विनिमयों को हैंडल करने के लिए इतालवी राज्यों में साख पत्रों के महत्वपूर्ण रूप विकसित हो गए। इन पत्रों में साख और विनिमय पत्र, *लेत्र द फआर* शामिल थे (ये नियामक पत्र फ्लैंडर्स, ब्राबांत,

आर्टोइस, शैंपेन और इतालवी राज्यों के व्यापार हलकों में प्रचलित थे)। इतालवी व्यापारी परिवारों ने हिसाब-किताब (बुककीपिंग) की पद्धति विकसित करके व्यवसाय और कंपनी वित्त की कला में महारत हासिल कर ली थी। पहले एकल प्रविष्टि पद्धति और बाद में दोहरी प्रविष्टि का विकास किया, जो आज भी प्रचलन में है। लुका पैसियोली ने 1494 में अपनी पुस्तक *सुइमा ऑफ अरिथमेटिक टेकनीक्स* में दोहरी प्रविष्टि हिसाब-किताब (डबल इंट्री बुककीपिंग) को प्रचलन में लाया। वाणिज्यिक अंकगणित पर यह एक मौलिक पुस्तक थी। इसमें लेन-देन को परिसंपत्ति और देयता के नीचे दो जगह लिखा जाता था। हालांकि डबल इंट्री-बुक की उत्पत्ति बहस का मुद्दा है। कई विद्वानों ने इस पुराने विचार को खारिज कर दिया है कि शायद इसकी उत्पत्ति 1430 के आसपास जेनोआ में हुई। अब यह माना जाता है कि यह अनेक इतालवी केंद्रों में एक साथ विकसित हुई। आर.डी. रूवर के अनुसार लेखाविधि की प्रगति में तीन कारकों—साझेदारी, ऋण और एजेंसी का प्रमुख योगदान है। इस अवधि में बीमा की अवधारणा का भी उदय हुआ। पहले पहल यह नौयात्रा संबंधी गतिविधियों में आरंभ हुई और बाद में अन्य व्यापार क्षेत्रों में भी आ गई। इटली में बीमा नियमों की नियमावली बनी। बाद में इसका नियंत्रण मजिस्ट्रेट और कांसल्स करते थे।

व्यवसाय की संरचना में, खास तौर पर इटली और जर्मनी में कुछ पूर्व पूंजीवादी विशिष्टताएं थीं। फ्लोरेंस में काफी बड़ी-बड़ी व्यावसायिक फर्में थीं। ये आधुनिक बैंक के समान नहीं थीं बल्कि ये अनिवार्यत: स्थानीय वित्तीय संस्थाएं थीं जो जमा (डिपोजिट्स) प्राप्ति और ऋण देती थीं। इनका मुख्य काम विदेशी विनिमय जैसे ऋण अंतरण और विनिमय प्रचालन करना था। ये मनीचेंजर्स का भी काम करती थीं और यूरोप के विभिन्न शहरों में इनकी शाखाएं थीं। आम तौर पर ये पारिवारिक संगठन के रूप में होती थीं। अनेक मर्चेंट-बैंकर घराने थे जैसे मेदिचीज, फ्रेस्काबाल्डी, फिलिपो स्ट्रोजी, बार्डी, पेरूरी। ये सभी फ्लोरेंस, लियों (फ्रांस) में केप्पोनी और ओग्सबर्ग (जर्मनी) में फ्यूगर्स के थे। फ्लोरेंस का मेदिची घराना मर्चेंट बैंकर्स के बीच सबसे प्रसिद्ध था। इसके प्रचालनों के पैमाने की जानकारी हमें कर की घोषणाओं के रिकार्ड बुक से मिलती है जिसे *कतास्तो* कहते हैं। मेदिची घराना यूरोप के सबसे बड़े बैंकिंग घरानों में से एक था। इसकी शाखाएं जेनोआ, एविगनन, ब्रुगेस और लंदन में थी। मेदिची परिवार अत्यधिक ऊंची ब्याज दरों (जो 50 प्रतिशत तक होती थी) पर पोप्स और कार्डिनल्स को ऋण मुहैया कराकर धनी बन गया। वे शासकों को भी उधार देते थे ताकि वे उनका कर जमा कर सकें। बरगंडी, इंगलैंड और मिलान के शासकों के साथ इनका वाणिज्यिक लेन-देन था। मेदिचीज विनिमय पत्र भी बेचते थे। यह वाणिज्यिक ऋण हैंडल करने का सर्वाधिक प्रचलित तरीका था। इस परिवार को अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक गतिविधि का काफी लंबा अनुभव था। अपने धन के बदौलत इन्होंने अपना राजनीतिक वर्चस्व भी बना लिया था। मेदिची परिवार ने 1466 से 1476 तक



तोल्फा एलम खान का भी प्रबंधन किया। एलम का उपयोग वस्त्र उद्योग के विस्तार में कच्चे माल के रूप में होता था। कॉसिमो डि मेदिची (1389-1464) ने यूरोप के अन्य हिस्सों की फर्मों के साथ अनेक द्विपक्षीय साझेदारियां भी कीं। इससे असीमित देनदारी की समस्या सुलझ गई, जिसके कारण पूर्व में भारी हानियां हुई थीं। पोप और अन्य प्रभावशाली राजनीतिक परिवारों के साथ वाणिज्यिक और राजनीतिक संबंधों से मेदिचीज को सोलहवीं सदी के आरंभ तक अपनी स्थिति मजबूत बनाए रखने में मदद मिली। जॉक कोएर एक अन्य बैंकिंग परिवार था जो फ्रांस का था। इसका भी बार्सिलोना, ब्रुगेस, पेरिस और पूर्वी भूमध्यसागर के शहरों सहित कई अन्य शहरों के व्यापारियों के साथ निकट संबंध था। वह अपने धन के बल पर फ्रांस के राजा चार्ल्स सप्तम का वित्तीय सलाहकार बन गया और फ्रांसीसी शाही टकसाल के प्रबंधन द्वारा खूब धन कमाया। उसने फ्रांसीसी शासक की बिगड़ती वित्तीय स्थिति को पुन: ठीक कर दिया। फ्यूगर्स जर्मनी का सबसे बड़ा मर्चेंट-बैंकर परिवार था। इतिहासकारों की जानकारी में पहले फ्यूगर हैंस थे। वह एक बुनकर थे और लगभग 1380 में वह दक्षिणी जर्मनी के ऑग्सबर्ग में बसने के लिए आए। वह वेनिस से कपास का आयात करते थे और सूती कपड़ा बनाते और बेचते थे। उनके बेटे जेकब प्रथम ने 1469 के बाद परिवार के व्यवसाय का विस्तार किया। वे रेशम, ऊनी कपड़े, सूती कपड़े, जरी के काम वाले कपड़े, मसाले, गहने और वस्त्र का कारोबार करने लगे। उन्होंने इटली, नीदरलैंड्स, साइलेसिया, पोलैंड और हंगरी के प्रमुख व्यापारियों के साथ व्यावसायिक संबंध स्थापित किए। वे पोप के आधिकारिक बैंकर्स बन गए और जर्मनी और रोम के बीच हर प्रकार के मौद्रिक अंतरण का संचालन करने लगे। 1470 और 1500 के बीच उनकी संपत्ति चार-गुना बढ़ी। उनका गौरव चरम सीमा पर पहुंच गया जब उनके ऋण से स्पेन के चार्ल्स पंचम 1590 में पवित्र रोम के सम्राट बनने में सक्षम हो सके। जर्मनी में तांबा और चांदी की खानों पर भी उनका कुछ नियंत्रण था। वे ट्रायोलीन चांदी खनन उद्योग के मालिक थे। इस प्रकार इन बैंकिंग घरानों और व्यावसायिक परिवारों ने एक वाणिज्यिक संरचना का सृजन किया था जिसका स्थान व्यवसाय और वाणिज्यिक संगठनों के अपेक्षाकृत अधिक विकसित रूप ने ले लिया और आधुनिक बैंकिंग प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया। इसका विशद अध्ययन वाणिज्यिक क्रांति शीर्षक के तहत किया गया है।

## ईसाई चर्च

रोमन साम्राज्य के पतन और सामंती व्यवस्था के उदय और विस्तार के साथ ही यूरोपीय चर्च दो शाखाओं में बंट गया। पोप का चर्च रोम में स्थित था जबकि ग्रीक आर्थोडॉक्स चर्च बाइजैंटाइन साम्राज्य के अधीन यूरोप के पूर्वी क्षेत्र में स्थित था। पोप का चर्च यूरोपीय समाज का एक महत्वपूर्ण बंधन बन गया और इसने पश्चिमी यूरोप में सामंती ढांचे को

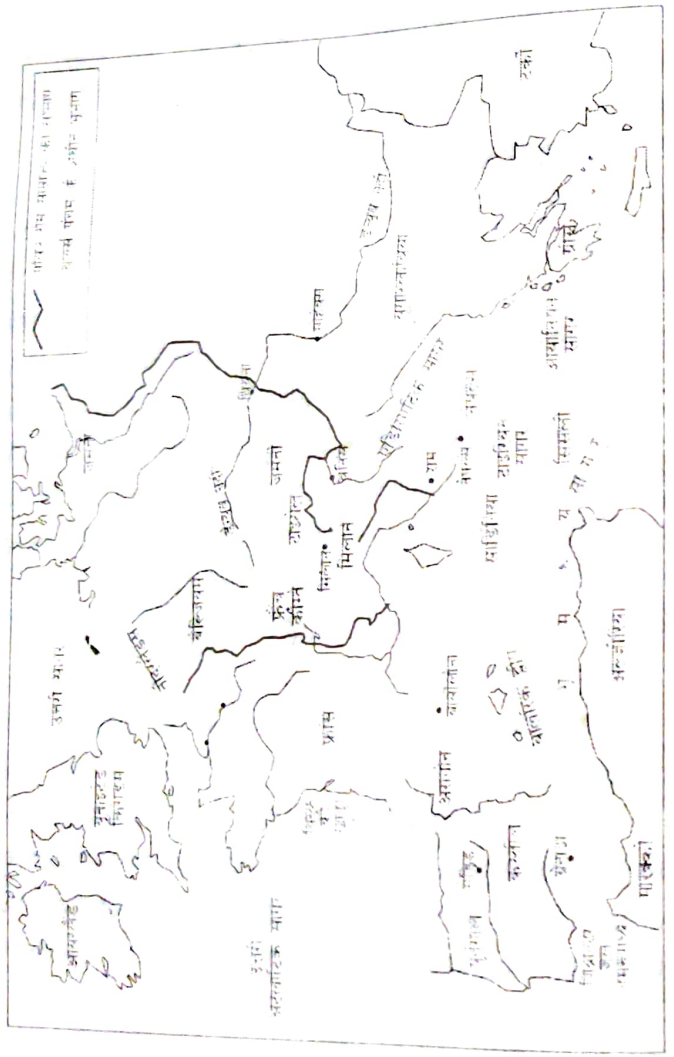

1519 में पवित्र रोम साम्राज्य का सम्राट चुने जाने के बाद स्पेन के चार्ल्स पंचम का साम्राज्य

मानचित्र 1.2 : ईसाई चर्च



मजबूत किया। याजक और अयाजक समाज के बीच विभाजक रेखा कोई बहुत सख्त नहीं थी। सिद्धांत रूप में पादरी कोई वंशगत वर्ग नहीं था। ये समाज के सभी वर्गों से चुने जाते थे। हालांकि इनमें समाज के उच्च वर्ग का अधिक प्रतिनिधित्व था। मध्यकाल के बीच की अवधि में पादरी वर्ग की स्थिति धीरे-धीरे बदल गई। इसका कारण मुद्रा अर्थव्यवस्था और बढ़ते मूल्यों द्वारा सृजित दबाव था। व्यापार के विस्तार और विलासिता की वस्तुओं पर बढ़ते व्यय के कारण अधिक आय की आवश्यकता थी। चर्च के बड़े पदों पर आसीन पादरियों ने अपनी आय बढ़ाने के लिए नई तरकीबें अपनाईं। सामंती संकट का चर्च की आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा क्योंकि इसकी अधिकांश आय धर्मशुल्क (टाइद—जो कि चर्च द्वारा भूमि आय पर लगाया गया कर था और कुल आय का 10 प्रतिशत बैठता था) से आती थी। इस धर्मशुल्क में उपर्युक्त आर्थिक और जनसांख्यिकीय संकटों के कारण ह्रास आ रहा था। पादरी वर्ग के बड़े और छोटे धर्माधिकारियों के बीच अंतर बढ़ गया था क्योंकि छोटे धर्माधिकारियों की स्थिति खराब हो गई थी। चर्च के बड़े धर्माधिकारी राज्य प्रशासन में शक्तिशाली पदों पर थे साथ ही वे चर्च के बड़े पदों पर भी आसीन थे। इंगलैंड में कार्डिनल वुलसे और स्पेन में कार्डिनल जाइमेंस उन व्यक्तियों के उदाहरण हैं जो सर्वोच्च राजकीय और धार्मिक दोनों पदों पर एक साथ आसीन थे। गांव के पेरिश के पादरी प्राय: कम पढ़े-लिखे होते थे और कम वेतन पाते थे। उनका जीवन उनके ग्रामीण यजमानों से शायद ही अलग था। बहुलता, अनुपस्थिति, भाई-भतीजावाद और जबरन वित्तीय वसूली जैसी बुराइयां पोप इनोसेंट अष्टम के समय में चरम पर पहुंच गई। वित्तीय वसूली पोप के चर्च पर एक बदनुमा दाग बन गया।

पोप के चर्च में संस्थागत संकट चौदहवीं सदी से ही आरंभ हो गया था। यह तीन महत्वपूर्ण दौर से गुजरा था। पहला दौर पोप के पद पर बेबिलोनियन कब्जा (1305 से 1378 तक) था जब पोप का पद रोम के बजाए फ्रांस के एविगनन में स्थित था और यह फ्रांसीसी सम्राट के हित को पूरा करता था। दूसरा दौर ग्रेट सिइज्म (1378 से 1417 तक) का था। इसमें पोप के पद के दावेदार दो विरोधी खेमे थे। एक का नेतृत्व फ्रांसीसी ग्रुप कर रहा था जिसमें स्कॉटलैंड, कस्तील और अरागोन राज्य शामिल थे। यह ग्रुप क्लिमेंट के दावों को मान्यता देता था जबकि शेष यूरोप अर्बन षष्ठम के दावों का समर्थन करता था। यहां तक कि यूरोपीय मठ भी रोमन और एविगनन दो खेमों में बंट गए। इस संकट का समाधान 1417 में काउंसिल ऑफ कांस्टैंट द्वारा किया गया। यह दौर चर्च शासन व्यवस्था की प्रकृति से जुड़े संकट का था। इसमें पोप और यूरोपीय शासकों के बीच संबंध के निर्धारण में काउंसिलियर सरकार ने अहम भूमिका निभाई। यद्यपि यूरोपीय शासकों के समर्थन से पंद्रहवीं सदी के अंत तक पोप ने आध्यात्मिक पद जीत लिया था, लेकिन यूरोपीय राज्यों में राष्ट्रीय चर्चों की स्थापना की प्रवृत्ति बढ़ रही थी। फ्रांसीसी शासक के प्रैग्मेटिक सैंक्सन (1438) के परिणामस्वरूप पोप के प्रभाव से स्वतंत्र गैलिकन चर्च का निर्माण

हुआ। इसके बाद स्पेन के शासकों और इंगलिश क्राऊन को रोम से अलग होने का धर्माधिकरण (इनक्विजिशन) दिया गया। पोप को इन समझौतों को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा। ये सभी घटनाएं पोप के पद के पतन का संकेत देती हैं। ये दरारें आने वाले संकट का सूचक थीं।

पंद्रहवीं सदी के अंतिम वर्षों में ईसाई चर्च की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता पुनर्जागरण संबंधी पोप के अधिकार (रिनेसां पेपेसि) के रूप में प्रकट हुई। पोप की सत्ता को खुद को परिषदी आंदोलन (कांसिलियर मूवमेंट) की अपकेंद्री शक्तियों के विरुद्ध पुनर्स्थापित करना था। चर्च की नीतियों के खिलाफ जन आक्रोश के कारण सुधारों की मांग हो रही थी। बहुत संघर्ष के बाद पोप 1450 तक खुद को रोम में पुनर्स्थापित कर सका। एक बार सुरक्षित हो जाने के बाद, आने वाले पोप चर्च और रोम शहर का पुनर्निर्माण करने लगे। इस दिशा में पहला प्रयास पोप निकोलस पंचम (1446 से 1455 तक) द्वारा किया गया। वह पुनर्जागरण के वातावरण में जी रहे थे और रोम के पुराने गौरव को स्थापित करने को बहुत इच्छुक थे। इसके लिए उन्होंने और उनके उत्तराधिकारियों ने कला को संरक्षण देना आरंभ किया। उन्होंने भव्य दरबार बनवाए और नई इमारतों और परियोजनाओं पर बहुत बड़ी धनराशि खर्च की। उनमें प्राचीन पांडुलिपियों को हासिल करने की मानववादी (ह्यूमैनिस्ट) प्रवृत्ति थी ताकि वे अन्य शहरों पर रोम की बौद्धिक व धार्मिक श्रेष्ठता सिद्ध कर सकें। चर्च ने फ्लोरेंस के प्रसिद्ध वास्तुकार अलबेर्ती को निर्माण कार्य में लगाया। अलबेर्ती ने वास्तु पर *ऑन आर्किटेक्चर* (1452) शीर्षक से एक श्रेष्ठ पुस्तक लिखी थी। अनेक शहरी परियोजनाएं शुरू की गई जैसे, खूबसूरत सार्वजनिक चौक, पुलों और सड़कों का निर्माण जो पुरातनता को प्रतिबिंबित करता था। पुराने भव्य भवनों के जीर्णोद्धार के भी प्रयास किए गए। पोप सिक्स्टस चतुर्थ ने 1475 में वैटिकन पैलेस में सिस्टाइन चैपेल के निर्माण का कार्य शुरू किया। उस समय के महान कलाकार मिशेल एंजेलो ने इसकी छत पर चित्रकारी की। सिक्स्टस ने पुनर्जागरण के कुछ बेहतरीन कलाकारों को इन कार्यों में लगाया, लेकिन दूसरी ओर वह अपनी हिंसक और लूट-खसोट की नीति और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा के रण उतने ही अलोकप्रिय भी थे। कार्डिनल्स और धर्मनिरपेक्ष परिवारों सहित कई अन्यों ने पुनर्जागरण के कलाकारों और वास्तुकारों को संरक्षण दिया। एक सुप्रसिद्ध संरक्षक चिगी थे। वह कुलीन परिवार से नहीं थे। उन्होंने विला फोर्नेसिया का निर्माण किया इसलिए पोप जूलियस द्वितीय ने उन्हें अभिजात वर्ग का दर्जा दिया। पंद्रहवीं सदी के अंत तक रोम एक शानदार शहर बन गया था। इसकी आबादी 1400 ई. के 17,000 से तेजी से बढ़कर 1517 ई. में 85,000 हो गई थी। यह एक प्रमुख यूरोपीय शहर बन गया और इससे ईसाई जगत में चर्च का महत्व काफी बढ़ गया। बहरहाल, अस्थायी गौरव और कलात्मक चमक-दमक ने आध्यात्मिक मामलों को पीछे धकेल दिया। चर्च के खिलाफ बढ़ते आक्रोश को पोप के अधिकारियों ने तब तक नोटिस नहीं किया जब तक कि लूथर का विरोध शुरू न हुआ।



## यूरोप का राजनीतिक मानचित्र

पंद्रहवीं सदी के अंत में यूरोपीय राजनीति का चरित्र अनिवार्यतः सामंती था। यह बहुत ही जटिल तसवीर पेश करता था क्योंकि एक क्षेत्र की राजनीति दूसरे क्षेत्र से अलग तरह की थी। यहां तक कि समान क्षेत्र में भी इसके अलग-अलग रूप थे। यूरोपीय राज्यों और जागीरों का राजनीतिक मानचित्र पारंपरिक, चयनात्मक या संयुक्त राजशाहियों का मिला-जुला रूप प्रस्तुत करता था। इनके अलावा अल्पतंत्र के कुछ व्यापक या संकीर्ण रूप और कुछ अर्द्ध स्वतंत्र या स्वतंत्र संघ थे। एक सम्राट भी होता था जो यूरोप के बड़े भूभागों पर लेकिन बिना किसी प्रभावी नियंत्रण के शासन करता था। वह पवित्र रोमन सम्राट कहलाता था। संक्षेप में, यूरोप के लोग कई तरीकों से शासित होते थे।

यूरोप के अधिकांश भागों में ऐसी राजनीतिक प्रणालियां थीं जो राज्य की शक्ति का विकेंद्रित स्वरूप प्रस्तुत करती थीं। सामंती कुलीनवर्ग को राजनीतिक, न्यायिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शक्तियां प्राप्त थीं। कई जगहों पर सर्वशक्तिमान सम्राट थे लेकिन कई स्थानों पर स्वामित्व की अधिव्याप्ति और इसमें परिवर्तन से इनकी शक्ति सीमित हो जाती थी। राजवंशीय नीति की खास तौर पर विवाह के मामलों में और शासकों की संपत्ति के निर्धारण के लिए वंशगत दावों में अहम भूमिका होती थी। सामंत अकसर छोटी-मोटी लड़ाइयों में उलझे रहते थे। कई अवसरों पर उत्तराधिकार के विवाद में ये झगड़े बड़ी लड़ाइयों में तबदील हो जाते। बहरहाल यूरोप के कुछ भागों में केंद्रीकरण की प्रक्रिया जारी थी। पंद्रहवीं सदी के अंत तक फ्रांस, इंगलैंड, स्पेन और मस्कोवी (मास्को) जैसे राज्यों ने शक्तिशाली केंद्रित राजतंत्रों के अभ्युदय का अनुभव किया।

पंद्रहवीं सदी में यूरोपीय राज्यों में फ्रांस सबसे धनी, सबसे अधिक आबादी वाला और क्षेत्रीय रूप से सबसे बड़ा राज्य था। फ्रांस की आबादी लगभग 12 मिलियन थी। उत्तर में लो कंट्रीज (निचले देशों) की सीमा से लेकर दक्षिण में भूमध्यसागर के तट तक फैला फ्रांस आर्थिक तौर पर सांस्कृतिक विविधता दरशाता था। जॉन ऑफ आर्क के नेतृत्व में इंगलैंड के साथ चले लंबे युद्ध के बाद फ्रांसीसी अंगरेजों से काफी बड़ी भूमि पुनः प्राप्त करने में सक्षम हुए। फ्रांस के एकीकरण की प्रक्रिया जारी रही। लेकिन कुछ राज्यों जैसे बरगंडी, ब्रिटेनी और अंजो ने इस पर रोक लगा दी। चार्ल्स दी बोल्ड डची ऑफ बरगंडी का शासक था। बरगंडी राज्य में नीदरलैंड्स और फ्रेंच कोमते के धनी भूभाग शामिल थे। ब्रुगेस न केवल एक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र के रूप में विकसित हुआ बल्कि यह एक सशक्त सांस्कृतिक केंद्र भी बन गया। इसका दरबार उस समय की फ्रांसीसी संस्कृति और कला का प्रतीक था। 1477 में चार्ल्स की मृत्यु के बाद बरगंडी की उत्तराधिकारिणी ने रोमन शासक के पुत्र आर्क ड्यूक मैक्समिलियन से शादी कर ली। वह 1493 में सिंहासन पर बैठा। फ्रांस के उत्तरी भाग पर वैलोइस राजवंश का शासन था लेकिन वहां कई स्वतंत्र प्रदेश या जागीर

थे जैसे इंगलिश राजा के अधीन गाइन, काऊंट के अधीन फ्लैंडर्स और ड्यूक के अधीन ब्रिटेनी। ये सभी फ्रांस के एकीकरण के प्रयास के विरोधी थे। बहरहाल लुई एकादश (1461-83), चार्ल्स अष्टम (1483-98) और लुई द्वादश (1498-1550) के अधीन फ्रांस बरगंडी, अंजो, मेने, प्रोविंस और ब्रिटेनी पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल रहा। कैलेयस को छोड़कर समस्त उत्तरी फ्रांस एकीकृत था। कैलेयस एक बंदरगाह शहर था जो सोलहवीं सदी के मध्य तक अंगरेजों के हाथों में रहा। फ्रांस में एक उचित राजनीतिक स्थिरता रही क्योंकि अधिकांश शासक लंबे समय तक शासन करते थे और शासकों का परिवर्तन अपेक्षाकृत उत्तराधिकार विवाद मुक्त होता था जबकि अन्य कई राज्यों में ऐसा नहीं था। फ्रांस में निरंकुश शासन के उदय से ग्रामीण किसानों की स्थिति में बदलाव नहीं आया। दासप्रथा के अधीन व्यक्तिगत गुलामी का स्थान आर्थिक निर्भरता ने ले लिया। सामंती मालिकों और राज्य के दोहरे नियंत्रण ने उसकी स्थिति और भी दयनीय बना दी। इतना ही नहीं उनसे यह भी अपेक्षा की जाती थी कि वे अपनी आय का दसवां भाग *टाइद* के रूप में चर्च को दें। एक ओर राज्य द्वारा उनकी वैधानिक संपत्ति की सुरक्षा और दूसरी ओर कुलीन वर्ग द्वारा उनके अत्यधिक शोषण से फ्रांसीसी ग्रामीणों की मुसीबतें लंबे समय तक बनी रहीं।

इंगलैंड में राजशाही को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया एक सदी से भी अधिक समय से जारी थी। फ्रांस के साथ लगभग सौ वर्षों से अधिक समय तक चले युद्ध और 1485 तक लगभग तीस वर्षों के घरेलू युद्ध, जिसे 'वार ऑफ रोजेज्' कहते हैं, ने इंगलैंड में ट्यूडर वंश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। इन युद्धों के परिणामस्वरूप सामंती कुलीन वर्ग की स्थिति कमजोर हुई। इंगलैंड ने सामाजिक और संवैधानिक क्षेत्रों में तेजी से प्रगति की। नाइट्स पहले सामंती सदस्य थे जिन्होंने सशस्त्र सैनिक वर्ग की अपनी हैसियत खो दी। पंद्रहवीं सदी और सोलहवीं सदी के आरंभ में उन्होंने खुद को भद्रजन (जेंट्री वर्ग) में शामिल कर लिया। इंगलैंड के जमींदार परिवारों ने सामाजिक रूप से परस्पर मिलना और बड़े व्यापारिक परिवारों में वैवाहिक संबंध बनाना भी शुरू कर दिया। इससे इंगलैंड में उल्लेखनीय सामाजिक परिवर्तन आरंभ हो गया। रिचर्ड तृतीय और हेनरी सप्तम ने शासन के निरंकुश रूप की नींव रखी जो धीरे-धीरे केंद्रीकृत और प्रभावी बनाया गया। ट्यूडर वंश की स्थापना से काफी लंबे समय तक स्थिरता रही। ट्यूडर्स ने एक प्रतिनिध्यात्मक संस्था के रूप में संसद के विकास और आर्थिक संपन्नता के संवर्द्धन में काफी योगदान दिया। इस अवधि में इंगलैंड में सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

स्पेन एक अन्य राज्य था जो यूरोपीय राज्यों पर अपने प्रभुत्व और बढ़ते महत्व का संकेत दे रहा था। छोटे स्वायत्त राज्यों और जागीरों को एक बड़ी इकाई में तबदील करने की प्रक्रिया कस्तील और अरागोन राज्यों के राजाओं के एकीकरण के साथ शुरू हुई। कस्तील की राजकुमारी इजाबेल और अरागोन के राजकुमार फर्डिनैंड की 1469 में शादी हुई। स्पेन



के भविष्य का निर्माण इसी शादी पर हुआ। 1475 की सेगोविया की संधि के तहत इजाबेल कस्तील के आंतरिक प्रशासन को नियंत्रित करती थी जबकि फर्डिनैंड विदेशी मामलों को देखता था। न्याय व्यवस्था वे संयुक्त रूप से देखते थे। कई कारणों से स्पेन के अन्य राज्यों की तुलना में कस्तील अधिक महत्वपूर्ण था। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह वहां का सबसे बड़ा राज्य था। इतना ही नहीं अन्य राज्यों की तुलना में इसकी आबादी और इसके भौतिक संसाधन भी अधिक थे। राज्य के मामलों में कोर्तेस के रूप में प्रतिनिधि संस्थाओं की भूमिका कम कर दी गई थी। स्पेन के राजा की शक्तियों को मजबूती देने के लिए चर्च की शक्तियों का प्रयोग *इनक्विजीशन* (अपधर्म को दबाने के लिए स्थापित एक धार्मिक अदालत) के जरिए किया जाता था। यद्यपि स्पेन का पूर्ण राजनीतिक एकीकरण 1716 तक हो पाया, लेकिन इसने पंद्रहवीं सदी के अंत से ही यूरोपीय मामलों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना शुरू कर दिया था। साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में स्पेन के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण नई दुनिया के कई उपनिवेशों का इसके द्वारा अधिग्रहण किया जाना था। इस प्रक्रिया में स्पेन यूरोपीय लोगों के लिए चांदी और अन्य कई उत्पादों का प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गया।

शक्तिशाली केंद्रीयकृत राज्य का उदय यूरोप के पूर्वी भूभागों में भी देखा जा सकता है। एक सशक्त और निर्मम राजशाही के अधीन एक केंद्रीयकृत राज्य के रूप में रूस का उदय ईवान तृतीय (1440-1505) के समय में आरंभ हुआ। मंगोल शासकों के अधिराज्य के अधीन एक छोटे से जागीर से अपनी ने एक आक्रामक नीति के जरिए पड़ोसी प्रदेशों को हड़पना आरंभ किया। उसने मंगोल शासकों से अनुमति लेने से इनकार कर दिया। उसने उनके शक्तिशाली आक्रमणों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया। अब 'मास्को का यह महान राजकुमार' मंगोलों का जागीरदार नहीं था। उसने रूस का विस्तार आरंभ किया। नोवगोरोद के शक्तिशाली व्यापारिक गणराज्य को जीता, टेर व्यात्का के शासक को दबाया, यारोस्लावी की जागीर और रोस्तोव के कुछ भाग को खरीदा। उसने स्वतंत्र जमींदारों को सेवक कुलीनों में तबदील कर दिया और उन पर कई तरह की शर्तें लगा दीं। रूस के उदय के साथ-साथ दासप्रथा को बल मिला। यूरोप के पश्चिमी राज्यों में दासप्रथा या तो कमजोर हो रही थी या नकद लगान पर आधारित काश्तकारी संबंध के नए रूप में तबदील हो रही थी। इसके विपरीत रूसी राजनीतिक संरचना एक ऐसे समाज पर लाद दी गई जो सामंतवाद के मजबूत होने का अनुभव कर रहा था।

जहां यूरोप के कुछ भागों में निरंकुश राजनीतिक संरचना विकसित हो रही थी, वहीं उत्तरी यूरोप के राज्य या तो विकेंद्रित थे या इनका एकीकरण किया जाना अभी बाकी था। 1397 से स्कैंडिनेवियाई देश, जिनमें स्वीडेन, नार्वे और डेनमार्क शामिल थे, यूनियन ऑफ कालमर के अधीन संयुक्त रूप से एक सम्राट द्वारा शासित होने लगे। स्वीडेन में इस यूनियन के खिलाफ जबरदस्त आंदोलन हुए। इनमें कुलीनों, स्वतंत्र किसानों और खान में काम

करने वालों ने भाग लिया। ये आंदोलन एक सशक्त राजतंत्र के खिलाफ अभिजातीय शत्रुता को प्रतिबिंबित करते थे। डेनमार्क के शासकों का प्रशासन स्वीडेन के भीतर कभी भी प्रभावी नहीं हो सका। सशक्त अभिजात वर्ग का दबाव तानाशाही के उत्थान के हमेशा आड़े आता था। हालांकि अभिजात वर्ग के पारंपरिक संघ *इर्कस्लैड* के विरुद्ध *इस्टेट्स ऑफ रिक्सडैग* के साथ संधि के जरिए स्वीडेन के भीतर एक मजबूत राजतंत्र उभर रहा था जिसकी परिणति तानाशाही और कुलीन अल्पतंत्र के बीच लंबे संघर्ष में हुई। राजा गुस्तावस ने कठोरता और व्यावहारिकता की मिली-जुली नीति अपनाई। उन्होंने कुछ जनवादी उपाय किए इससे लोहे की खानों और जंगलों के दोहन के जरिए उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ हो गई। वह एक निरंकुश शासन की स्थापना में सफल हो गया लेकिन केवल थोड़े समय के लिए। इस दौरान स्वीडेन एक महत्वपूर्ण शक्ति बन गया। यह यूरोप के राजनीतिक और आर्थिक मामलों में सक्रिय रूप से भाग लेता था। नीदरलैंड्स उत्तरी सागर के निकट स्थित लो कंट्रीज (निचले देशों) का एक हिस्सा था। इसमें 17 राज्य थे। बेल्जियम, लक्जेमबर्ग और नीदरलैंड्स के वर्तमान प्रदेश इसमें शामिल थे। नीदरलैंड्स का प्रत्येक राज्य अपने संविधान, अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों द्वारा शासित होता था। इस क्षेत्र में न केवल राजनीतिक एकता की कमी थी बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता का सर्वथा अभाव था। बल्कि यह नस्लीय और भाषाई फूट दरशाता था। भौगोलिक दृष्टि से समुद्र से इसकी निकटता और इसके स्वायत्त सामाजिक संघटन के कारण सामंतवाद का इस पर कोई खास असर नहीं था।

मध्य यूरोप के अनेक छोटे-छोटे राज्य राजाओं, ड्यूक्स या चर्च के अधिकारियों द्वारा शासित थे। दक्षिणी जर्मनी के राज्यों ने अपनी आपसी शत्रुता के बावजूद स्विस हमलों का मुकाबला करने और ड्यूक विटल्सबैक के अधीन बावेरिया के विस्तार को रोकने के लिए 1488 में *स्वाबियन लीग* का गठन किया। जर्मनी में अलगाववादी प्रवृत्तियां इतनी तीव्र थीं कि वे किसी साम्राज्यिक शासन द्वारा नियंत्रित होना नहीं चाहते थे। कई जर्मन राज्य पवित्र रोमन साम्राज्य के अंग थे। पंद्रहवीं सदी के अंत में पवित्र रोम साम्राज्य पर मैक्सिमिलियन प्रथम (1459-1519) का शासन था। पवित्र रोम साम्राज्य का विचार मध्यकालीन चरित्र का था। यह छोटे-छोटे राज्यों के शासकों को एक संगठन के अधीन लाने का प्रयास करता था। इसका मुख्य उद्देश्य पोप के अधीन रोमन कैथोलिक चर्च को यूरोप के बाहरी या भीतरी खतरों से बचाना और इसे बढ़ावा देना था। हालांकि पंद्रहवीं सदी तक यह साम्राज्य व्यर्थ हो गया था और अपने अस्तित्व का प्रयोजन खोज रहा था। पवित्र रोम साम्राज्य का अस्तित्व दो स्तरों पर था। शीर्ष स्तर पर सम्राट की सहायता जागीरों की सभा, जिसे डेट कहा जाता था, के भीतर एक कमजोर प्रशासन द्वारा की जाती थी। डेट जर्मनी, बोहेमिया और नीदरलैंड्स के कुछ प्रदेशों के अभिजात वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था। इसके भीतर सात 'चयनकर्ताओं' की सभा होती थी। ये चयनित राजकुमार पवित्र रोमन सम्राट का चयन करते थे। निचले



स्तर पर 'हाऊस ऑफ रिप्रजेंटेटिव्स' थी। यह विभिन्न दर्जे और हैसियत के 300 सदस्यों का प्रतिनिधित्व करती थी। इसमें राजा, चयनकर्ता, ड्यूक्स, मार्ग्रेव्स और कुछ नाइट्स भी शामिल थे, जिनके पास भूसंपत्ति होती थी। पवित्र रोमन साम्राज्य यूरोप के विशाल क्षेत्रों में फैला हुआ था। इसके अंतर्गत आस्ट्रिया, जर्मन राज्य, बोहेमिया, नीदरलैंड्स, लो कंट्रीज और उत्तरी और मध्य इटली के कुछ राज्य शामिल थे। यूरोप का इतना बड़ा भूभाग अपने अधिकार क्षेत्र में होने के बावजूद पवित्र रोमन सम्राट की शक्तियां वास्तविक न होकर नाम मात्र की थीं। यह यूरोप के शासक परिवारों के बीच राजवंशीय मित्रता की नीति का परिणाम था। मैक्सिमिलियन प्रथम ने बरगंडी की राजकुमारी, मैरी से शादी करके डची ऑफ बरगंडी, नीदरलैंड्स के सतरह राज्यों, आर्टोइस और फ्रेंच-कोमते हासिल किया। नीदरलैंड्स का नियंत्रण करना उन्हें कठिन लगा क्योंकि यहां अतिविकेंद्रित सरकार थी जिसमें शहरी कुलीन वर्ग और वाणिज्यिक अभिजात वर्ग का दबदबा था। उन्होंने अपने बेटे, फिलिप की शादी स्पेन के फर्डिनैंड और इजाबेल की बेटी के साथ की। स्पेन और पुर्तगाल के जुड़ जाने के बाद उनका साम्राज्य अनियंत्रणीय हो गया। जर्मन राज्यों पर उनका कोई प्रभावी नियंत्रण नहीं रहा। जर्मन राज्य हैब्सबर्ग शासकों, जो पवित्र रोमन साम्राज्य पर शासन कर रहे थे, का प्रतिरोध करते थे और उनकी योजनाओं को संदेह की दृष्टि से देखते थे। राजवंशीय महत्वाकांक्षा और प्रादेशिक शत्रुता के परिणामस्वरूप इतालवी प्रदेशों में एक लंबा युद्ध चला, जिसे हैब्सबर्ग-वेलुआ युद्ध यानी सम्राट और फ्रांसीसी शासकों के बीच युद्ध कहा जाता है।

जहां रूस में निरंकुश राज्य का केंद्रीय रूप विकसित हो रहा था वहीं शेष पूर्वी यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था अपेक्षाकृत कमजोर और जटिल थी। इसमें पोलैंड-लिथुआनिया, हंगरी और बोहेमिया राज्य शामिल थे। ये राज्य आपस में ढीले-ढाले रूप में राजवंशीय संबंधों द्वारा जुड़े थे। हंगरी और बोहेमिया के शासक आपस में एक थे और पोलैंड का शासक हंगरी के राजा का निकट रिश्तेदार था। ये सभी शासक पोलैंड और लिथुआनिया के जगीएलो घराने से संबंधित थे। शासक घरानों के पारिवारिक संबंधों और पोलैंड, हंगरी और बोहेमिया में राजशाही चयनात्मक प्रकृति की होने के कारण प्रशासनिक निरंतरता की संभावना सीमित थी। पेशेवर प्रशासक वर्ग करीब-करीब नहीं थे। सशक्त केंद्रीय राज्यों के अभ्युदय में इस क्षेत्र के सामने बहुत बड़ी कठिनाई थी क्योंकि इन देशों की तकदीरें पूरी तरह कुलीन वर्ग के व्यक्तिगत हितों द्वारा निर्धारित होती थीं। पोलैंड का संवैधानिक ढांचा हंगरी के संवैधानिक स्वरूप से भी पुराना था। पोलैंड निरंतर विदेशी युद्धों में लगा रहता था। *सलाक्टा* नीचे के स्तर के कुलीनों का एक वर्ग था। इसने राज्य के मामलों के संचालन में सफलतापूर्वक राजा के बराबरी का दर्जा हासिल कर लिया था। शीघ्र ही इन्होंने अपनी शक्ति शहरों और ग्रामीण आबादी पर भी बढ़ा ली। पारंपरिक जमींदारों ने वाणिज्यिक खेती शुरू की ताकि बरास्ता *डांजिग* खाद्यान्नों का निर्यात किया जा सके। इस वाणिज्यिक खेती ने

मुक्त किसानों को 1496 और 1511 के बीच बनाए गए अनेक कानूनों के जरिए पूरी तरह गुलाम बना दिया। इन कानूनों के हिसाब से किसान मालिक की सहमति के बिना खेत नहीं छोड़ सकते थे। इससे किसानों की वैधानिक स्थिति का अवमूल्यन हुआ। हंगरी में स्थिति और भी खराब थी। राजा की शक्ति लगभग समाप्त हो गई थी। किसी प्रभावी राजनीतिक शक्ति की अनुपस्थिति में छोटे जमींदारों और बड़े जमींदारों के बीच संघर्ष के दरवाजे खुल गए थे। इससे हंगरी के किसानों की स्थिति बहुत ही खराब हो गई। बोहेमिया व्यावहारिक रूप में एक अभिजातीय गणराज्य बन गया था। हंगरी और पोलैंड की स्थिति के समान ही बोहेमिया के कुलीन वर्ग के पास बहुत बड़ी राजनीतिक शक्तियां और संवैधानिक स्वतंत्रता थी, जबकि शेष वर्ग सभी सुविधाओं से वंचित, दासत्व के कगार पर थे। बोहेमियाई किसानों की स्थिति में भी समान रूप से गिरावट आई। बोहेमिया के कुलीनों ने शहरों के खिलाफ आक्रामक नीतियां अपनाईं, जिसके फलस्वरूप गंभीर संघर्ष हुए। धार्मिक और राष्ट्रीय विरोध से संघर्ष और भी तेज हो गया। शहर के नागरिकों को ग्रामीण जिलों में व्यापार करने की मनाही थी और व्यापारियों को सड़कों पर भी गिरफ्तार कर लिया जाता था। 1500 ई. के संविधान द्वारा वे डेट से निष्कासित कर दिए जाते थे। धनाढ्यों के बीच गंभीर संघर्ष ने देश को करीब-करीब गृहयुद्ध में धकेल दिया। हालांकि नागरिक अपने खोए हुए कुछ आधार प्राप्त करने में सफल हुए और 1517 ई. में प्रतिनिधित्व का अधिकार वापस पाया। यह समस्त क्षेत्र पड़ोसी राज्यों के लिए अशांति का स्रोत बना रहा। आरंभ के वर्षों में पोलैंड और लिथुआनिया मिलकर रूस के प्रदेशों सहित बाहरी क्षेत्रों पर हमले करते रहते थे। इस क्षेत्र की राजनीतिक कमजोरी के कारण बाद में अपेक्षाकृत शक्तिशाली राज्य कमजोर राज्यों पर आक्रमण करने के लिए आकर्षित हुए और इसका लाभ लेने लगे। अठारहवीं सदी के अंत में पोलैंड एक ऐसा उदाहरण बन गया। इसका तीन शक्तिशाली पड़ोसियों—रूस, प्रशा और आस्ट्रिया ने आपस में विभाजन कर लिया।

### इतालवी नगर-राज्य

आल्प्स पर्वत श्रेणियों के दक्षिण में स्थित प्रायद्वीप विविधता, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक उन्नति की दृष्टि से यूरोप का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र था। इसमें इतालवी राज्य शामिल थे जो विभिन्न राजनीतिक रूपों के द्योतक थे। पंद्रहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इस क्षेत्र ने प्रादेशिक और राजवंशीय महत्वाकांक्षाओं को लेकर लंबे समय तक युद्ध देखा। इटली कभी भी पूरी तरह सामंती व्यवस्था के रूप में विकसित नहीं हुआ। जब आल्प्स के उत्तर में पूरे यूरोप में सामंतवाद पूरी तरह छा गया था उस समय भी इतालवी नगरों की अवनति नहीं हुई। इतालवी राज्यों की अर्थव्यवस्था वाणिज्य, व्यापार और उद्योग पर चलती रही। कृषि की भूमिका अपेक्षाकृत कम थी। इतालवी राज्यों की प्रगति मुख्य रूप से शहरों और नगरों के



विस्तार पर आधारित थी जो कभी भी पूरी तरह डचीज (ड्यूक के क्षेत्र) और काउंटी पर आश्रित नहीं थी। मध्यकाल के बीच की अवधि में इतालवी प्रायद्वीप का तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजन हो गया : (क) रेगनम इटैलिकम, जिसमें उत्तरी इटली और मध्य इटली के कई भाग शामिल थे। यह पवित्र रोमन साम्राज्य का एक अभिन्न अंग था। (ख) मध्य इटली, रोम सहित—इस पर पोप का शासन था और (ग) दक्षिणी इतालवी राज्यों में से अधिकांश पर विदेशी राजवंशों, जैसे फ्रांसीसी, आरानीज, जर्मन और नार्मंस का शासन था।

जहां आल्प्स के उत्तर में समाज अभी भी ग्रामीण और सामंती आधार पर संगठित था। वहीं इतालवी नगर-राज्यों ने शहरी संस्थाओं के विकास को बहुत प्रभावित किया। अभिजात वर्ग के सीन्यारी (सम्मानित व्यक्ति) अधिकांश नगर-राज्यों पर शासन करते थे। वे प्रशासन और सुशासन की नई व्यवस्था विकसित करते थे। प्रत्येक नगर का अपना *पोदेस्ता* (मेयर) होता था और प्रत्येक जिला कैप्टेंस ऑफ द गार्ड द्वारा शासित होता था। इतालवी राज्यों के बीच चले लंबे संघर्ष के फलस्वरूप पांच महत्वपूर्ण राज्यों का उदय हुआ। मोटे तौर पर इनकी शक्तियां समान थीं और इसलिए इनके बीच राजनीतिक प्रभाव का एक तरह का संतुलन था। कोई एक राज्य दूसरों को दबा नहीं सकता था। इन पांच बड़े राज्यों के बीच अनेक छोटे-छोटे प्रदेश थे। काफी हद तक इन्हें स्वायत्तता थी लेकिन ये बड़े राज्यों के प्रभाव का शिकार भी बनते थे। इन बड़े राज्यों में मिलान, वेनिस, फ्लोरेंस, पेपेसि और नेपल्स शामिल थे। इटली में हर जगह ये बड़े नगर छोटे नगरों की कीमत पर आगे बढ़ रहे थे। 1454 में *पीस ऑफ लोदी* के बाद ये पांच राज्य 1494 के फ्रांसीसी आक्रमण तक शांतिपूर्ण ढंग से रहे। यद्यपि इन राज्यों का आकार और चरित्र भिन्न था, लेकिन उनका राजनीतिक प्रभाव अच्छी तरह संतुलित था। मिलान विस्कोंटी परिवार के अधीन था। यह एक डची (ड्यूक का क्षेत्र) था और इसका सामरिक महत्व था। यहां प्रमुख नागरिकों की एक परिषद थी जिसके 900 सदस्य थे। यह नगर फ्रांस और पश्चिमी जर्मनी को जाने वाले व्यापार मार्ग पर अवस्थित था। यहां धातुकर्म और वस्त्र जैसे कुछ महत्वपूर्ण उद्योग थे। इसने वेनिस के क्षेत्रीय विस्तार पर विराम लगा दिया क्योंकि इसने एक शक्तिशाली स्थायी सेना और सुप्रशिक्षित घुड़सवार सेना विकसित कर ली थी। सिंचाई के विस्तार के परिणामस्वरूप कृषि संसाधनों में विकास हुआ। इससे सिल्क उद्योग के विस्तार में मदद मिली। विस्कोंटि ड्यूक्स ने राज्य केंद्रीय प्रशासन को प्रभावी ढंग से विकसित किया। 1447 के बाद गणतंत्रवाद की दिशा में कुछ प्रयोग किए गए लेकिन ये असफल रहे। इसके तुरंत बाद फ्रैंसेस्को फोर्जा (Sforza) मिलान के ड्यूक बने। एक अच्छे प्रशासनिक संगठन ने मिलान की सैन्य शक्ति को मजबूती दी। यह सांस्कृतिक गौरव का समय था लेकिन इसी समय राजनीतिक संकटों का आरंभ भी हुआ।

नेपल्स और सार्डिनिया में पंद्रहवीं सदी के एक सामंती राज्य के सभी गुण मौजूद थे। नार्मन विजेताओं द्वारा उन पर लादे गए पारंपरिक संगठन को उन्होंने कायम रखा था।

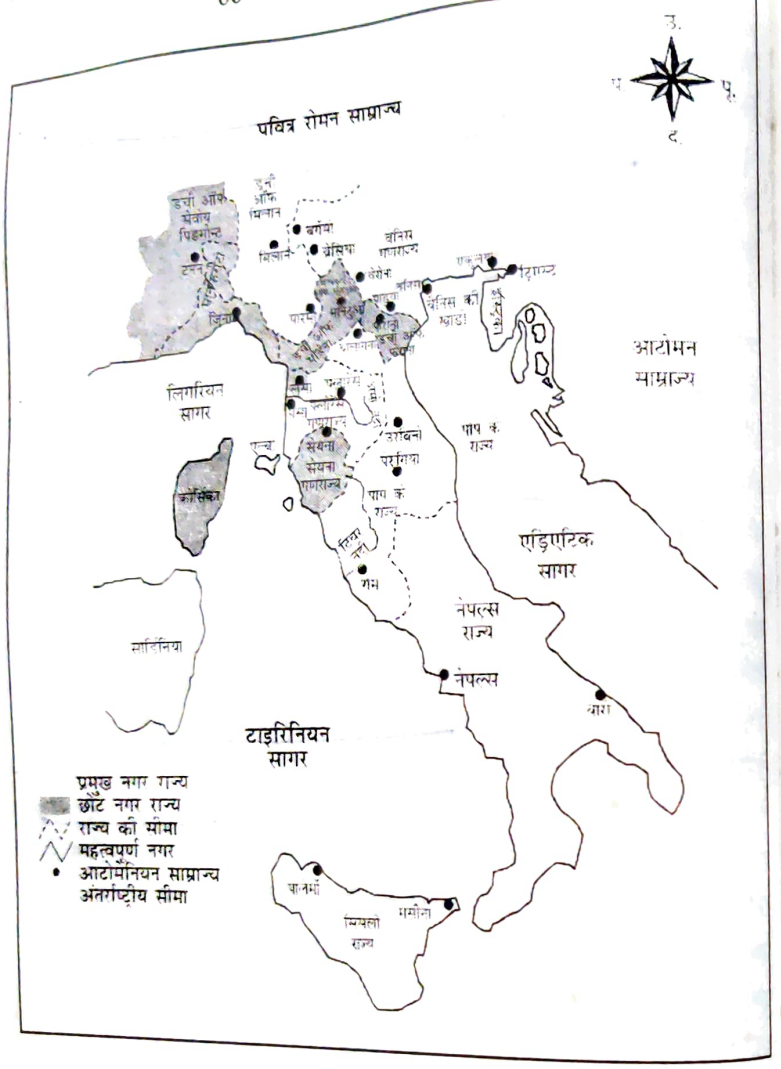


**मानचित्र 1.3**
**पंद्रहवीं सदी के अंत में इतालवी नगर-राज्य**



विदेशी मूल के कुलीनों के पास यहां बड़ी-बड़ी जागीरें थीं और वे लगभग राजा की जिंदगी जीते थे। वे राजतंत्र से करीब-करीब स्वतंत्र रूप में कार्य करते थे। यहां राजशाही आर्गन के एक राजवंश के हाथों में थी। इन राज्यों में इंगलिश मॉडेल पर आधारित संसदीय सरकार की लंबी ऐतिहासिक परंपरा थी। संसद न्यायालय के रूप में कार्य करता था और कानून प्रकाशित करता था। धनी कुलीन वर्ग के लोग और भूमि मालिक इसका प्रतिनिधित्व करते थे। शासक वर्ग भारी कर लगाकर और फ्लोरेंस की पूंजी व्यापार में निवेश करके अपने वित्तीय संसाधनों को विकसित करते थे। आल्फोंसो पुनर्जागरण का प्रतीक राजकुमार था। वह शिक्षा, कला और वास्तु का बहुत बड़ा संरक्षक था। उसने अपने दरबार में कई प्रतिभाशाली कलाकारों को संरक्षण दिया था। हालांकि कई कारणों से उसके राज्य में हमेशा कठिनाई बनी रहती थी। क्षेत्रीय आधिपत्य के सवाल पर पोप के साथ उसका संबंध तनावयुक्त रहता था। नेपल्स को एड्रिएटिक सागर में वेनिस के षड्यंत्रों से भी निपटना पड़ रहा था। देश के भीतर भी राज्य का भारी कराधान जन विद्रोह का स्रोत बन गया था।

ग्रेट सिइज्म के बाद रोम और पोप से संबंधित राज्य चर्च के जागीर थे। पोप तमाम इतालवी प्रदेशों को अपने आधिपत्य में लाना चाहता था। इसमें उसे कई बाधाओं का सामना करना पड़ा। रोम अनिवार्यत: एक गणतंत्रीय नगर था। यद्यपि इसने यहां पोप के अधिष्ठान को मान्यता दे दी क्योंकि इससे रोम के लोगों को प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ मिला। पोप संबंधी नीति का विरोध महान रोमन परिवार के लोग कर सकते थे। इनकी बड़ी-बड़ी इमारतें और जागीरें थीं और *कॉलेज ऑफ कार्डिनल्स* में इनका प्रतिनिधित्व था। पेरूगिया और बोलोना जैसे पोप संबंधी नगर व अन्य स्थानों के शासक घराने करीब-करीब स्वतंत्र थे, लेकिन पोप की सत्ता की चुनौती का सामना करने का साहस उनमें नहीं था क्योंकि वे बहिष्करण और पोप के अपनी प्रजा पर प्रभाव से डरते थे। राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से रोम इटली का एक महत्वपूर्ण नगर रहा।

सभी इतालवी नगर-राज्यों में वेनिस और फ्लोरेंस दो आर्थिक रूप से संपन्न राज्य थे। यद्यपि कई मामलों में इनमें आपस में विरोधाभास था। वेनिस की संपन्नता कुस्तुनतुनिया से होकर भूमि मार्ग से आने वाले पूरब के उत्पादों के व्यापार एकाधिकार पर निर्भर थी। ब्रोदेल के शब्दों में वेनिस पंद्रहवीं सदी तक विश्व अर्थव्यवस्था का केंद्र बन गया क्योंकि सभी महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग यहां आकर मिलते थे। उत्तरी मार्ग वेनिस को ऑग्सबर्ग, वियेना, न्यूरेमबर्ग, वेसले, स्ट्रैसबर्ग और हैमबर्ग से गुजरते हुए नीदरलैंड्स से जोड़ता था। पश्चिम-पूरब मार्ग इसे पश्चिम की ओर ब्रुगेस और लंदन से और पूरब में लिवांत से जोड़ता था। तेरहवीं सदी से वेनिस एक अन्य इतालवी नगर जेनोआ के साथ कटुशत्रुता में उलझ गया। वेनिस क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा से भरा हुआ एक विस्तारशील राज्य था। चौदहवीं सदी के अंत तक इसने कोर्फू पर कब्जा कर लिया, जो कि एड्रिएटिक का प्रवेश-द्वार था। पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह करीब-करीब एक साम्राज्य बन गया जो लिवांत के मार्ग पर वाणिज्यिक

और सामरिक हितों पर निर्भर था। इसकी सीमा आल्प्स से लेकर पो और अड्डा से लेकर इसोंजों तक फैली थी। इस नगर-राज्य की राजनीतिक सत्ता व्यापारियों के अल्पतंत्र—अ काउंसिल ऑफ टेन के हाथों में थी। निम्न वर्गों को भी वेनिस के लंबी दूरी के व्यापार के लाभ में हिस्सा मिलता था। उन्हें सरकार की हलके कर की नीति का भी लाभ प्राप्त था। कुलीन वर्ग को एक सशक्त सरकार के फायदों का अहसास था। हालांकि कुलीन वर्ग राजनीतिक सत्ता के एकाधिकार में भागीदार थे, लेकिन सरकारी विनियमनों के जरिए धन को एक परिवार के हाथों में एकत्रित होने नहीं दिया जाता था। इससे धन का बेहतर वितरण होता था। हर वर्ग के हितों की रक्षा की जाती थी। इससे काफी हद तक राजनीतिक स्थायित्व बनाए रखने में मदद मिलती थी। 1560 के पहले वेनिस में सबसे बड़ा शस्त्रागार था। इसे उस समय का सबसे बड़ा औद्योगिक प्रतिष्ठान माना जाता था। इसमें पूंजीवादी तर्ज पर 1,000 से अधिक मजदूर एक स्थान पर काम करते थे। इस प्रकार वेनिस की अर्थव्यवस्था में बाजार, दुकानें, गोदाम, शस्त्रागार, छापाखाना, टकसाल, मनीचेंजर्स और बैंकर्स ये सभी चीजें थीं जो धन का अंतरण और वस्तुओं का लेन-देन करते थे। स्टॉक एक्सचेंज का काम रियाल्टो द्वारा किया जाता था। यह वस्तुओं के मूल्य निर्धारित करता था और सार्वजनिक ऋणों पर ब्याज दरों का निर्धारण करता था। यह नौपरिवहन बीमा के लिए प्रीमियम भी तय करता था। धन के संवितरण में विविधता थी। व्यापार से होने वाले लाभ कई स्थानों पर एकत्र किए जाते थे जहां से धन का निवेश और पुनर्निवेश किया जाता था। इसे देखते हुए आलिवर कॉक्स ने टिप्पणी की है कि वेनिस पूंजीवाद का पहला उदाहरण था। ब्रोदेल इस मत से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। जेक्का स्थित वेनिस का टकसाल दूसरा महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र था। यहां प्रतिवर्ष लगभग 2 मिलियन सोने और चांदी के ड्यूकेट्स बनते थे। वेनिस के व्यापारियों का भूमध्यसागर में व्यापार की तमाम प्रमुख वस्तुओं जैसे काली मिर्च, मसाले, सिरियन कॉटन, अनाज, शराब और कई अन्य चीजों पर प्रभावी रूप में नियंत्रण था। विदेशी व्यापारियों को अलग निवास स्थान में रहने को कहा जाता था, जो कि नगर से दूर फोंदुक्स (भवनों की गली) में रहते थे। जिस कीमत पर वे बाहर से सामान खरीदते थे उसी कीमत पर उन्हें यहां भी सामान खरीदने पर मजबूर किया जाता था। वेनेसियाई राज्यों ने व्यापार हस्तक्षेप की प्रणाली अपनाई थी जिसे 'गेलेर दि मरकेतो' कहते हैं। वे निर्यात करने वाले व्यापारियों को राज्य का जहाज भी मुहैया कराते थे। यह एक प्रकार के राज्य हस्तक्षेप की नीति थी, राज्य के उद्यम और सार्वजनिक एसोसिएशन का संयोजन। *गेलेर* निर्यातकों का एक संघ था। इन निर्यातकों की रुचि अपनी परिवहन लागत को कम करने में थी ताकि वे अपने विदेशी प्रतिद्वंद्वियों की प्रतिस्पर्धा में बने रहें। व्यापार पर केंद्रित होने का मतलब यह नहीं है कि वेनिस के अपने उद्योग नहीं थे। यहां प्रिंटिंग, ऊन, रेशम, कागज, शीशा और दर्पण उद्योग थे। जैसा कि मिस्किमिन कहते हैं कि वेनेसियाई उद्योग इटली के अंधकारतम युग के दौरान संपन्न हुआ। वेनिस में श्रमिकों की दो दुनिया थी। गिल्ड मजदूर जो कुल श्रम



जुनियर राइस, एफ. यूजन, *दि फाउंडेशन ऑफ अर्ली मॉडर्न यूरोप, 1460-1559*, लंदन, वाइडेनफील्ड एंड निकोल्सन, 1971. पूर्वआधुनिक यूरोप के आरंभिक वर्षों के बारे में अध्ययन के लिए अच्छी किताब है.

वर्नर रोजनर, *पीजेंट्री ऑफ यूरोप*, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवेल, 1994. यह व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को कवर करती है. सामंतवाद के अधीन ग्रामीण किसानों की स्थिति के बारे में अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयोगी है.

टियोफिलो एफ. रुइज, *स्पैनिश सोसाइटी, 1400-1600*, हार्लो, लांगमैन, 2001. यह लोकसंस्कृति, त्योहारों और उत्सवों का अध्ययन करती है.

जोसफ आर. स्ट्रेयर, *मेडीवल स्टेटक्राफ्ट एंड दि पर्सपेक्टिव ऑफ हिस्टरी*, न्यू जर्सी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971. सामंतवाद का अर्थ और सामंती संस्थाओं के विकास के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है.

जॉन बी. बोल्फ, *दि इमरजेंस ऑफ यूरोपियन सिविलाइजेशन, फ्राम दि मिडिल एजेज् टू दि आपेनिंग ऑफ दि नाइंटींथ सेंचुरी*, न्यूयॉर्क, हार्पर, 1962. यूरोपीय इतिहास का अध्ययन करने वाले नए पाठकों के लिए यह उपयोगी पुस्तक है क्योंकि यह राजनीतिक संस्थाओं, सामाजिक-आर्थिक पैटर्न्स और बौद्धिक गतिविधियों की बदलती प्रवृत्तियों का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करती है.